

DPN 6902

Title : अमरकोश / AMARA KOSHA

Run. No. 7627

Cat. No.

Micro. No.

Subject कोश Lexicon

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.-New. / Maith.-New. / New.-Nep. /

Size in cms. 9.5 x 26.5

Folios 119

Lines (in a page) 6/7/9

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

ब्रह्मराज Bramha Raja

Author / translator

Scribe / donor

सुगतदास तुलाधर

Date: NS / SS / VS / KS 741 (शाही वेद महीधर)

Ruler / place

Sugata Dasa Tuladhar

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

ॐ नमः सर्वज्ञाय ॥ ॥ यस्मै ज्ञानं दद्यात् सिन्धो रगाधस्वानघागुणाः
सेव्यतामक्षयो धीराः स्त ज्ञेये चामृताय च ॥ P.T.O.

Col. इति लिङ्गादि संग्रहवर्गः।

इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने विश्वोपनिषद्नादि
काण्डस्त्रिकाण्डे समाप्तं ॥

शशि वेद मदी^४धरांकिते^७ठदे जिन मासे कुकुते कवेश्चवारे ॥
लिखति स्म कृशानुना^७श्चने न्दि पदकोषं द्विज बृहन्नराजनामा॥



सर्वज्ञानसंग्रहस्य संपादनं
सर्वज्ञानसंग्रहस्य संपादनं

[illegible]

दीर्घा

[illegible]

पुनश्च रात्रिः कथमनीनिःशब्दा यस्याधीधितिः श्रुत्या । सुषुप्तान् प्रवृत्तिहा लम्बयिष्यति दीकय ॥ नादि १॥ नादि २॥
 नृत्तं यथा प्रकाशं प्रागश्रुतयः ॥ कायं कथं न मदीयं कदम्बं एव गच्छति ॥ निर्मिता दूरे त्वेव गच्छतु मृगान् श्रमनीयिका ॥
 कालादिद्वन्द्वेन तालि समन्ताद्यथयद्वितीः युतियद्वन्द्वं मस्तीत्यं गदाशमिधया द्वया ॥ अश्रुदिनाहर्मावृत्तं कीदृशिव
 सदाहर्मा ॥ यत्प्रादुर्भूतं सर्वस्य मयं हृत्पुत्रसीश्रुति ॥ यत्प्रागश्रुतिना नोक्तं सत्यं सन्नापितं प्रसक्तं आकाशनाद्रमक्षद्व
 र्त्तिसन्धुमथसर्वेनी ॥ नेन निम्नाधिनीनादि प्रिया माद्वयदाद्वया ॥ यत्प्रादुर्भूतं मस्तीत्यं नकुनीनामिनीतमी ॥ यत्प्रागश्रुतिना
 नादि १॥ नादि २॥ कथमनीनिःशब्दा यस्याधीधितिः श्रुत्या । सुषुप्तान् प्रवृत्तिहा लम्बयिष्यति दीकय ॥ नादि १॥ नादि २॥

नादि उभयस्योक्तौ दोगामपुत्रद्वयोर्महोत्तमैस्तृतीयं त्रिदशमं च नवमं । यद्वाकोपकृतं त्रयोदशं यद्वा मासीकुपति
मा। कलादीनसान्मतिः ४५ पुत्राकाङ्क्षाकन ॥ अथ स्यात्तामायास्या दर्शष्टयं नृसंगान १ साष्टयं ३ सिनीवाला
सान्द्रकलकृत् १ उपनाम्नश्च हाजाद्र युक्तेस्त्रिन्विधे मित्तव । सापयूषोपनक्षो वा वेग्न्यानामुपादिग्धा ज्ञेयार्थे प
द्यवर्णो दिवाकरनिनाकेयो ॥ अथादलनिष्ठायां कु काष्ठमिन्द्रियतुल ६ कला १ तां कुर्विष्यन्कृतं सुतु रुरुकादा दन्मिमा
तनुगिदमेहाभाव १ पररुदलयवरा । यक्षपक्षीपञ्चलुक कपोतमाम्बुगावूलो गोहीमाह्वादिमासीसा इत्युक्तं नयनं निजि
॥ अथ नक्षत्राणि त्रैदिकं दक्षिणां चैव तत्त्व १ समनति दिनकाले विष्वक्छिव्वजनम् ॥ द्रव्यायुक्तां दुर्घुमासां जीवी साम्बुन

२६३ नमिउतानिभा. बुद्धआरुगिनश्चनमा.

0

0

या-

七

20

5

10

5

0

नमो भगवते वासुदेवाय
श्रीः

नमो भगवते वासुदेवाय

दैत्यैः स्वर्गमिनैः कश्चिदप्यस्य नीयुष्यान्नाद्याः को वनिका ईका । रमिनीयमिनीवशा रावी विधानं
 वयं । जनकोयवराजमुद्रमात्रा रुरुदात्र कश्चाजोरुदात्रकादव सुसुमारुरुदात्रिका धरुवा
 कृणारिषकाया मिगनासुवराहिनी । अत्र प्रथमवर्धको जाड्यमालमुत्राप्रियः ॥ अमोमानाथ
 वालासा द्रासुराग्रामुमानिषः ॥ अत्रिका रमिनीसुखानिष्ठा निवर्तुषु सभा । हृष्टु हृष्टु हलाद्वाने
 नीयैः नदीसर्वायमि । अर्धलावर्गविक्रया वीर्यकारिणयोसमो । निवर्तुषु सभायां दक्षिणाधिक
 सान्विक । नृपतेवीनकद्रुणादुगुरुसुरयानका । वीरस्योडवत्रसा ॥ अत्रिका ॥ अत्रिका ॥
 सुसुमारुरुदात्रामा ॥ सुवरादाधनयथः ॥ वेवर्तुषु सभायां दक्षिणाधिक ॥ ॥

0 CMS. 5 10 15 20 25

दीनमस...

स्मान्

दा २

दा २

सारुद्वनावीनः ॥ कात्रुर्वाकद्रुणाद्युवा । क्रिया दयानकन्या । अत्रिका । अत्रिका । अत्रिका ।
 सारुद्वनावीनः । विवर्तुषु सभायां दक्षिणाधिक । विवर्तुषु सभायां दक्षिणाधिक । विवर्तुषु सभायां दक्षिणाधिक ।
 सारुद्वनावीनः । रयं कर्तुषु सभायां दक्षिणाधिक । रयं कर्तुषु सभायां दक्षिणाधिक । रयं कर्तुषु सभायां दक्षिणाधिक ।
 सारुद्वनावीनः । विवर्तुषु सभायां दक्षिणाधिक । विवर्तुषु सभायां दक्षिणाधिक । विवर्तुषु सभायां दक्षिणाधिक ।
 सारुद्वनावीनः । विवर्तुषु सभायां दक्षिणाधिक । विवर्तुषु सभायां दक्षिणाधिक । विवर्तुषु सभायां दक्षिणाधिक ।
 सारुद्वनावीनः । विवर्तुषु सभायां दक्षिणाधिक । विवर्तुषु सभायां दक्षिणाधिक । विवर्तुषु सभायां दक्षिणाधिक ।

नमो भगवते वासुदेवाय

20

15

माथ

१७

४॥ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

श्रीश्रीरुद्राय नमः ॥ कायात्रायास्तु लब्धयि त्रैवित्राक्षविद्वया मन्त्रोक्तोऽनुष्ठीकृत्वा ॥ यथाका
 यानुगायध्वविद्यामीश्वरं ॥ यथाकायकाशमर्षनाय युनिघातृद्व्योक्तियो ॥ गुणोक्तः
 वत्रिंशत्तुम्भादंष्ट्रिंशद्विंशमभयमानाप्रियमाहादंष्ट्रमस्तदा ॥ हाहदं ॥ १॥ काकास्तुह
 रागृद्व्यांकातिस्मनात्रथकाभारितावस्तव्यसमहान्ताससादया ॥ २॥ यथाधिनोधर्मविना
 यस्माधिमनसीयथास्यात्रिनामृतिना ध्यानमूल्योक्तिकसम ॥ उत्साहाध्ववसामस्यासं
 वीर्यमनिगदिराक् ॥ कपटीस्त्रीयाजदक्ष ॥ यधयष्टमकमव ॥ कृष्णगच्छकृति ॥ ३॥ यथायमादा
 नि

10

5

इतवधानगा ॥ योमहर्षिकोउर्क ॥ कोउर्कनकुहर्ल ॥ श्रीश्रीविलासविद्याक विद्यमाललिनन ॥ हर्ल
 रिलस्यमीहावा ॥ ४॥ श्रीगीतगावडा ॥ ५॥ उवकालियहासा ॥ ६॥ जलीतावनम ॥ ७॥ वाथजा ॥ ८॥ यदज
 लकृष्ण ॥ ९॥ जससावकुर्देन ॥ १०॥ यमोनिदाय ॥ ११॥ सुद ॥ १२॥ त्यातयानरवयगा ॥ १३॥ अवदिता ॥ १४॥ कात्रशुदि
 ॥ १५॥ समीसमदगसंयमी ॥ १६॥ त्यादावृत्रिगकीहास ॥ १७॥ त्यास ॥ १८॥ तमनाकक्षिमी ॥ १९॥ नधमस्यादिहसिमी ॥ २०॥ ग्रामा
 नामहर्ष ॥ २१॥ कदिर्न ॥ २२॥ कदिर्न ॥ २३॥ कदिर्न ॥ २४॥ कदिर्न ॥ २५॥ कदिर्न ॥ २६॥ कदिर्न ॥ २७॥ कदिर्न ॥ २८॥ कदिर्न ॥ २९॥ कदिर्न ॥ ३०॥ कदिर्न ॥ ३१॥ कदिर्न ॥ ३२॥ कदिर्न ॥ ३३॥ कदिर्न ॥ ३४॥ कदिर्न ॥ ३५॥ कदिर्न ॥ ३६॥ कदिर्न ॥ ३७॥ कदिर्न ॥ ३८॥ कदिर्न ॥ ३९॥ कदिर्न ॥ ४०॥ कदिर्न ॥ ४१॥ कदिर्न ॥ ४२॥ कदिर्न ॥ ४३॥ कदिर्न ॥ ४४॥ कदिर्न ॥ ४५॥ कदिर्न ॥ ४६॥ कदिर्न ॥ ४७॥ कदिर्न ॥ ४८॥ कदिर्न ॥ ४९॥ कदिर्न ॥ ५०॥ कदिर्न ॥ ५१॥ कदिर्न ॥ ५२॥ कदिर्न ॥ ५३॥ कदिर्न ॥ ५४॥ कदिर्न ॥ ५५॥ कदिर्न ॥ ५६॥ कदिर्न ॥ ५७॥ कदिर्न ॥ ५८॥ कदिर्न ॥ ५९॥ कदिर्न ॥ ६०॥ कदिर्न ॥ ६१॥ कदिर्न ॥ ६२॥ कदिर्न ॥ ६३॥ कदिर्न ॥ ६४॥ कदिर्न ॥ ६५॥ कदिर्न ॥ ६६॥ कदिर्न ॥ ६७॥ कदिर्न ॥ ६८॥ कदिर्न ॥ ६९॥ कदिर्न ॥ ७०॥ कदिर्न ॥ ७१॥ कदिर्न ॥ ७२॥ कदिर्न ॥ ७३॥ कदिर्न ॥ ७४॥ कदिर्न ॥ ७५॥ कदिर्न ॥ ७६॥ कदिर्न ॥ ७७॥ कदिर्न ॥ ७८॥ कदिर्न ॥ ७९॥ कदिर्न ॥ ८०॥ कदिर्न ॥ ८१॥ कदिर्न ॥ ८२॥ कदिर्न ॥ ८३॥ कदिर्न ॥ ८४॥ कदिर्न ॥ ८५॥ कदिर्न ॥ ८६॥ कदिर्न ॥ ८७॥ कदिर्न ॥ ८८॥ कदिर्न ॥ ८९॥ कदिर्न ॥ ९०॥ कदिर्न ॥ ९१॥ कदिर्न ॥ ९२॥ कदिर्न ॥ ९३॥ कदिर्न ॥ ९४॥ कदिर्न ॥ ९५॥ कदिर्न ॥ ९६॥ कदिर्न ॥ ९७॥ कदिर्न ॥ ९८॥ कदिर्न ॥ ९९॥ कदिर्न ॥ १००॥ कदिर्न ॥

सं लो ४

^{यत्र कथा नाम} ^{संस्मृतं नैव नृणां कथा} ^{हृत्पुत्रं नृणां कथा} ^{नृणां कथा}
 हतं। अग्नौ सवयव्यासा। प्राणीका छांदवादिनी। सांयादिक ४ यातव सिः कर्णु अ व सु ना विक १। निमा
^{यत्र कथा नाम} ^{संस्मृतं नैव नृणां कथा} ^{हृत्पुत्रं नृणां कथा} ^{नृणां कथा}
 मका १ यातव रा १ कृयका छुगवृक १। नोका दधु १ कृयनी सा द नि पु क नी या त क १। अत्रि १ स्त्री का स
^{यत्र कथा नाम} ^{संस्मृतं नैव नृणां कथा} ^{हृत्पुत्रं नृणां कथा} ^{नृणां कथा}
 कूदाल १ स कया १ नु स य नं। प्रिका ग म ल स न र क १ क ल य १ इ न नृ अ विल १ मि मं ग ती नं गं ती न म
^{यत्र कथा नाम} ^{संस्मृतं नैव नृणां कथा} ^{हृत्पुत्रं नृणां कथा} ^{नृणां कथा}
 लानं ग द्वि य र्थ म्। अग्नौ ध मं त ल स्य र्ण के व ल दानं धी य नो। अनाय १ र्थ सिया लं स्या कृते स र्ग प वि
^{यत्र कथा नाम} ^{संस्मृतं नैव नृणां कथा} ^{हृत्पुत्रं नृणां कथा} ^{नृणां कथा}
 उक्तं। मत्स्या धा नी दू व वी सा द दि र्ण म ल्प व द नं। य धू ना मा प्प क्षा म ल्प। मा ना वे र्ण। वि र्ण १ र्ण १।
^{यत्र कथा नाम} ^{संस्मृतं नैव नृणां कथा} ^{हृत्पुत्रं नृणां कथा} ^{नृणां कथा}
 विष्म नं ग क ली य १। ग उ क १ ग दू ल र्क १। स र स द धु १ या र्ण न उ ल यो नि धु क १ स मी। न ल मी न

[illegible]

ॐ नमः

ममृत्रस्यप्रियांशुकी॥ इतीमादीर्घकायिका॥ जलागुथाजलाधाना॥ सुगुणधजलाद्रुद॥ आदावमुनिया
नशा इयकूपजलागये॥ यस्मिन्वाभ्युदीकूप॥ उदयाननुयूसिवा॥ नमिहिकास्थेविनाश॥ मुख्यव
धनमस्ययत्॥ यस्मिन्वाभ्युदीकूप॥ देखातदेवरातका॥ यद्वाकत्रसुदा॥ कासात्र॥ सनसी
सन॥ वलन॥ यल्लल॥ मनोवायीउदीचिका॥ अयनुयनिस्वाक्षत्र॥ संहसायउक्षत्रदी॥ सादाल
वालमीवाल॥ मावायाधनदीसत्रिग॥ तत्रकिंहीलिवलिनी॥ गहिनीद्रादिनीधनी॥ आतस्रतीदीयवती॥
मुवकीनिमृगयगमा॥ गमीविष्णुयादीउद्रु॥ गतयासूननिमृगमा॥ रागीत्रथीप्रियथगम॥ वि॥ गमागतीगमस

[illegible]

20

5

शी १॥

२०

^{दुग्ध} कम्पदती। ^{युग्म} कम्पदिनानलिनानु, ^{युग्म} विसितीयप्रिनीम, ^{युग्म} या। ^{युग्म} वायुसियद्विनसिन, ^{युग्म} मलविन्दमस्यल। ^{युग्म} स
^{युग्म} रूमययंकमलं ^{युग्म} नगययंक ^{युग्म} (गगय)। ^{युग्म} य। ^{युग्म} किरूदंतामत्रसं ^{युग्म} सानसं ^{युग्म} सनसीनदं। ^{युग्म} विसयुसनराजीव
^{युग्म} युष्कनाम्ना ^{युग्म} नृदामिनायुल ^{युग्म} लीकं ^{युग्म} सिताभाजं ^{युग्म} मथनक ^{युग्म} सनात्रुह। ^{युग्म} त्रकी ^{युग्म} तयलं ^{युग्म} काकनदं ^{युग्म} नाला ^{युग्म} तालमथा
^{युग्म} सियां। ^{युग्म} मलविंसमजादि ^{युग्म} कदम्ब ^{युग्म} वधुमलियां। ^{युग्म} सम्बलिका ^{युग्म} नवदलं ^{युग्म} वीजका ^{युग्म} धावत्रोटक ॥ ^{युग्म} उका ^{युग्म} स्व
^{युग्म} यामिदिकात् ^{युग्म} धी ^{युग्म} नदादिसना ^{युग्म} द्युकां। ^{युग्म} यामाल ^{युग्म} गगिनत्रकं ^{युग्म} वा ^{युग्म} विर्येषां ^{युग्म} वसकीतं ॥ ^{युग्म} ॥ ^{युग्म} याता ^{युग्म} लवर्ग ॥
^{युग्म} ॥ ^{युग्म} मत्र ^{युग्म} सिंह ^{युग्म} कृती ^{युग्म} नाम ^{युग्म} लिङ्गा ^{युग्म} नृणा ^{युग्म} सन ^{युग्म} सना ^{युग्म} दिका ^{युग्म} तु ^{युग्म} १ ^{युग्म} यथ ^{युग्म} म ॥ २ ^{युग्म} ॥ ^{युग्म} वम्भ ^{युग्म} १ ^{युग्म} य ^{युग्म} धी ^{युग्म} य ^{युग्म} न ^{युग्म} का ^{युग्म} र
^{युग्म} कट ^{युग्म} हाट ^{युग्म} गिरा ^{युग्म} कट ^{युग्म} कि ^{युग्म} कट ^{युग्म} कट ^{युग्म} न ^{युग्म} लि ^{युग्म} यी। ३ ^{युग्म} अ ^{युग्म} म्हा ^{युग्म} लता ^{युग्म} वा ^{युग्म} वि ^{युग्म} वा ^{युग्म} नृ ^{युग्म} नृ ^{युग्म} र्क ^{युग्म} न

10

5

^{युग्म} धनो ^{युग्म} वधि ^{युग्म} म ^{युग्म} ग ^{युग्म} दि ^{युग्म} ति ॥ ^{युग्म} न ^{युग्म} यु ^{युग्म} अ ^{युग्म} क ^{युग्म} डि ^{युग्म} वि ^{युग्म} क ^{युग्म} डे ॥ ^{युग्म} सा ^{युग्म} की ^{युग्म} या ^{युग्म} की ^{युग्म} नि ^{युग्म} हा ^{युग्म} दि ^{युग्म} ता ॥ ^{युग्म} रु ^{युग्म} रू ^{युग्म} मि ^{युग्म} न ^{युग्म} व ^{युग्म} ला ^{युग्म} न ^{युग्म} ना ^{युग्म} न ^{युग्म} सा ^{युग्म} वि ^{युग्म} न्ध
^{युग्म} म ^{युग्म} ना ^{युग्म} लि ^{युग्म} ना ॥ ^{युग्म} ध ^{युग्म} ना ^{युग्म} ध ^{युग्म} नि ^{युग्म} श ^{युग्म} ध ^{युग्म} न ^{युग्म} वि ॥ ^{युग्म} का ^{युग्म} ग ^{युग्म} या ^{युग्म} का ^{युग्म} न्ध ^{युग्म} यी ^{युग्म} कि ^{युग्म} ति ॥ ^{युग्म} स ^{युग्म} र्व ^{युग्म} स ^{युग्म} हा ^{युग्म} व ^{युग्म} स ^{युग्म} म ^{युग्म} ती ^{युग्म} व ^{युग्म} स ^{युग्म} (ध ^{युग्म} वी ^{युग्म} व ^{युग्म} स ^{युग्म} न्ध ^{युग्म} ना ^{युग्म} ग
^{युग्म} जा ^{युग्म} क ^{युग्म} १ ^{युग्म} य ^{युग्म} धि ^{युग्म} वी ^{युग्म} य ^{युग्म} धी ^{युग्म} का ^{युग्म} र ^{युग्म} वा ^{युग्म} नि ^{युग्म} म ^{युग्म} दि ^{युग्म} नी ^{युग्म} म ^{युग्म} ही ^{युग्म} म ^{युग्म} नृ ^{युग्म} लि ^{युग्म} का ^{युग्म} यु ^{युग्म} ग ^{युग्म} सा ^{युग्म} तु ^{युग्म} म ^{युग्म} त्सा ^{युग्म} म ^{युग्म} त्सा ^{युग्म} व ^{युग्म} म ^{युग्म} लि ^{युग्म} का ^{युग्म} उ ^{युग्म} र्व ^{युग्म} ना ^{युग्म} स ^{युग्म} व ^{युग्म} स
^{युग्म} सा ^{युग्म} र्ध ^{युग्म} सा ^{युग्म} दू ^{युग्म} व ॥ ^{युग्म} का ^{युग्म} न ^{युग्म} म ^{युग्म} लि ^{युग्म} का ^{युग्म} उ ^{युग्म} स ^{युग्म} वा ^{युग्म} नृ ^{युग्म} य ^{युग्म} नृ ^{युग्म} द्वा ^{युग्म} व ^{युग्म} या ^{युग्म} नृ ^{युग्म} लि ^{युग्म} (म ^{युग्म} क ^{युग्म} लं ^{युग्म} क ^{युग्म} ली ^{युग्म} स ^{युग्म} मा ^{युग्म} नी ^{युग्म} म ^{युग्म} नृ ^{युग्म} ध ^{युग्म} न्धा ^{युग्म} ना ^{युग्म} द ^{युग्म} व ^{युग्म} षि ^{युग्म} ला
^{युग्म} यु ^{युग्म} र्ग ^{युग्म} न ^{युग्म} स ^{युग्म} म ^{युग्म} पि ^{युग्म} ष ^{युग्म} (ध ^{युग्म} ज ^{युग्म} ग ^{युग्म} नी ^{युग्म} ला ^{युग्म} क ॥ ^{युग्म} वि ^{युग्म} ष ^{युग्म} यं ^{युग्म} नृ ^{युग्म} व ^{युग्म} न ^{युग्म} ज ^{युग्म} ग ^{युग्म} ॥ ^{युग्म} ला ^{युग्म} का ^{युग्म} य ^{युग्म} ता ^{युग्म} न ^{युग्म} तं ^{युग्म} व ^{युग्म} र्ध ^{युग्म} न ^{युग्म} ना ^{युग्म} व ^{युग्म} र्ण ^{युग्म} म ^{युग्म} या ^{युग्म} व ^{युग्म} ध ॥
^{युग्म} द ^{युग्म} ल १ ^{युग्म} यु ^{युग्म} न्ध ^{युग्म} कि ^{युग्म} त ^{युग्म} या ^{युग्म} च ^{युग्म} उ ^{युग्म} दी ^{युग्म} च ^{युग्म} १ ^{युग्म} य ^{युग्म} धि ^{युग्म} म ^{युग्म} लि ^{युग्म} न १ ^{युग्म} यु ^{युग्म} र्ण ^{युग्म} का ^{युग्म} यु ^{युग्म} क ^{युग्म} द ^{युग्म} ल १ ^{युग्म} सा ^{युग्म} त ^{युग्म} म ^{युग्म} द ^{युग्म} ल ^{युग्म} म ^{युग्म} म ^{युग्म} म ^{युग्म} १ ^{युग्म} आ ^{युग्म} र्थ ^{युग्म} य ^{युग्म} र्ण १

0

centimeters 5 10 15 2.0 2.5

20

5

विन्ध्यहिमालयार्क...
विन्ध्यहिमालयार्क...
विन्ध्यहिमालयार्क...

यद्यपि...
नद्वे...
यायमनूय...
व मूनया...
थक्रम...
यद्यनरु...

श्री ॥

२१

10

5

माग्नध्व...
नक्षत्र...
लक्ष्मी...
॥ गतं ॥ यद्यपि...
वा यरुन...
माणय...

नागकन्यावगादि

20

15

श्री १५

२२

का नावन १ गल १ याची त्रयाक भाव नि १ शिखि सी कुशु भैरु कां गदन न्य सुकी लकां गुरु गल द व
 शिर्ग वल्म सन्निकतनं निग्नक वस्त्र सदनं रवना गत्र मन्त्रित्री गुरु १ यस्मि वरु मव निका र्थे नि
 लया लया वास १ कुठा द्वया लला सरा संजमनं लिदं वतु १ गल मूनी नाकु यवू लला उजा मियां च
 एमां यगनं दुल वाजि लला उम न्द्रा १ आ वलनं शिलो गला पुया यानी यल्लालिका ॥ म० का गदिनिल
 या य ऊ पुमदिना गुरु गुरु गमनं वास गुरु सविष्ट सुतिका गुरु वातायनं गवा १ सा लमु या मी
 जना प्रय १ रु र्था दि धनि ना वास १ प्रा सा द वरु रुजां सो धा मी ना ज सदन मय का र्थी य का निका ॥

10

5

स्वस्तिक १ सर्व ता रडा नया वला दया पिवा विकन्दक १ यर दालि रवनी ग्वन सन्ननां सा गत्रं रु रुजाम
 न १ यत्र सा देव प्राधर्ता छद्म न्द्रा व प्राधन्य सा देव १ शाम म मियां पुद्या यय धालिन्दा वरि द्वा यय का रु
 का गुरु व गुरु वी दुरु त्यर्जी न व ल ना जि न अधरु धा न्द्रा विमिला ना सो ना नू य त्रि लितां पुच्छ न म न्द्रा न
 सा त्यरु न्द्रा न्द्रा न्द्रा क वली कनी पु य टल यान् थ य टलं रु वि (गया व सी गु व र हा द न व क द न्द्रा वि ॥
 कथा गया लिका या लु विठ के य न यी स क शी द्वा द्वा न यगी दान १ सा दित दि मु वरिका ता न (ध मी वरि द्वा न्द्रा पु
 न दान लु (ग यूरु कूट पू द्वा त्रि य द्वा सि नख सुस्मि न्द्रा धि वि कया ठ म न्द्रा न्द्रा गद्वि क्क स कर्ल नना आ नर

आकाश म स वा द ना खानाम

२५४॥

[illegible]

20

15

10

5

संनयनः संनयनः संनयनः
 मंसर्पं। मकनन्दः पुष्पनसः यनागः समनानजः। द्विर्दिनयुसवसर्षं रुनीतकादयः ४ भिर्या। श्रान्तं
 वेनयप्राकृतेयः (अधिरुं देरुल)। वार्तनः रुलर्जं वा ऊम्सी ऊम् ४ ऊम् वी। पृष्ठातीयः एतयः ४ स्व
 लिमी वीरुयः ४ रुल। विदार्थाया मुमूल विष्णु कीर्वायिपाटला। वाधिद्रुमः लदलः ४ विषालः ४ ऊम् ४ नाग
 नः ४ श्रान्तं थकयिक्तसु द्विधित्वा हिमन्मथा। तस्मिन् दधिरुलः ४ पुष्प रुलदकनः ४ अयि। उइमन्
 ऊम् रुला ऊम् कीरुमद्वयः ४ काविदात्रयमत्रिकः ४ कृत्वा लायुगयः ४ सफयः (विना तत्त्वकः ३
 ज्ञानदीपिसमस्तः ४ श्रान्त्यधेनाऊवृत्तः सम्याकचतुर्नली। श्रान्तवगः ४ वाधियातः कृत्वा मालस्यवर्ष

श्रीश॥

२५

काः ४ सूर्जवीरदकनः ० ऊम् ऊम् नऊम् रुला ४ वरुधेवन्तः ४ सुरु सिकः ४ कः ४ मानकः ४ पुनागयुत्र
 वम्भुर् ४ कः ४ वा दव वल्लरा ४ यात्रिण्ड निम्बतन् अन्दात्र ४ यात्रिजातकः ४ गिनि (सुन्दनानमीत्र
 थद्रुनिसूकः ४ वृक्षलक्ष्मिपृष्ठः ४ द्वीपीतनकयीतनी। आश्रितकमधूकः ४ गुणपुष्पमधूकः ४ वानथ
 रुमधूली लो कलङ्कमधूलकः ४ पीलो गुणरुलः ४ ससी तस्मिन् मुनित्रिसम्भवा ऊम् उ कर्षना लोद्वा वः ४
 (०) निकाचकः ४ यला (किंलुकः ४ यः ४ वागया (थथवतसः। तथः ४ पुष्पविदलः ४ नागवानात्रवः ४ रुला
 ४ द्वीयन्त्रिधाधविधूलो नादयी वाम्भुवतसः ॥ नाग ऊम् नलिश्रुतिः ४ गन्धकाकीयमावकाः ४ त्रकासीमधूसिग

20

ज

श्री १॥

२७

१ सा दनिरु निल १ समो तिल गति लो मेलु को माल न धीरु ला वयि । यु को ज ठी प र्क ठा सा त्र (ग्र) ध
 व रु या द ट १ ग म ल व १ ग्मा व न ला धु सि नी ट किल म ऊ नो । अ उ मू ग न स सो सो सरु का ना मि से न त श क र्क
 ल ख ल क की व को लि का गु गु ल १ यू न १ ग ल १ ग्मा क क १ नी ग उ द्वा ला व रु वा न क १ ना जा द न पि याल
 १ सा ल स न क डू द न १ य ट १ ग म्मा नी स व्वा र्क १ का म्मा नी म धु य र्क का । गी य वी र ड य धू चि का म्मा र्क १
 य थ द य १ क र्क धू व द नी कालि १ काल क व ल निल सि वा न व न दं धा ग्मा य थ सा सा द क र्क १ वि क र्क
 न १ धू वा व को य किल ला धा धु या द यि नि ना व न ना ग न (मी) ना द यी र मि उ म्मा । नि न्द क १ हू ऊ क १ काल १

लं पा ०२

10

ज

रु न्द ग्मा नि ति सान क । का क न्द १ कूल क १ का क पी ल क १ का क नि न्द क । (ग) नी य म न ला य धा या ट लि र्क
 क म्मा र्क को । तिल क १ क न क १ ग्री मा न स मी पि व ल मा व को । गी य र्क का क म्मा र्क का क म्मा र्क को के ट र्क क र्क लो । का म्मा
 क १ य टि का र्क १ सा ल य र्क ला का य सा द न १ न्द म्मा य १ क म्मा र्क द्वा (ग) व द्वा ना व । ल क नी य पि य क
 क द म्मा रु द नि पि यी वी न व को र्क ना मि म्मा र्क ला न को पि य । ग र्क ला क न्द ना ल क पी न न स ग्मा र्क
 का १ य र्क पि ति किल पि य । पि का थ पी न सान क । स र्क का स न व धू क य थ पि य क जी व का १ सा ल रु द
 स र्क का धा य क र्क का १ ग म्मा स म्मा न १ न दी स र्क वी न न र्क नि उ द्द १ क क र्क र्क न १ ना जा ध न रु ला धू र्क को

क्या ०२

कृष्णयाकं रुलाविग्रहं सूर्यधाम १ कनकमण्डपं । कालकन्दमालायाः कायिकुण्डलसिन्दूरसिन्दु
वायनन्दसूत्रिणा निष्कृष्टीन्द्राविकस्ययि । तदीयवनागनीदय गाण्डीमृगस्ययि । गारुसिनी
पुस्तुकी गवसूत्रकुमलिका । रत्नदीर्घागरी नृध्वसेवास्वायवनादेवा । शालिकाकुसुमदा निष्कृ
ष्टीनालिकाचरा । सिगासी श्वनसूत्रमा रत्नवध्वथमागधी । गङ्गा कायधिकाम्बरा सायी तादृम
यूषिका । अतिमृक ४ युक्तु १ स्याद्वासनीमाधवीलगा । समतामालगीजाति ४ सकलानवमालि
का । माय्या कुन्दनका कस्तुरि वधूका कायध्वजीवका । सहाकुमात्रीतनवी नम्रानम्रमहास

20

15

सुदमरुत

क्रादु कीमता

०३६ वासन

दा। नपु। ए। कृत्रक सुपयीन कृत्रक नीलासिन्धु दया द्याम दासीयाक दालधमासि
 नयक सुमिणी स्या कसिन्धु वृत्तका त्रु। यीमा कृत्रक सिन्धु तसिन्धु वानी दया शडासु
 यूर्याज वायूर्या त्रु यूर्या निलस्य यूर्या। युतिहासगतयास वक्रान दयमात्रका शकवयी कै
 श्री॥ त्रेत्री त्रु कक त्रु निलस्य यूर्या। उन्मरु १ किनवा १५५ धूम्रव १ कनका कय १ मातुला मदन २९
 धीस्य रुल मातुल यूर्या क १ रुलस्य तावीज यूर्या त्रु वकी मातुल र्मिक १ समीवा १ मत्रयक १ यु
 रूप्यरु विजुं क १ ऊती वाय थय नस क विजुं त्रु १० वकी। सिन १ ऊ काठया १ ठु विजुं का

10

5

धनकना

वृद्धिपद

वित्तपद

वज्रिस्तक १। अ क्रीक वसुका रुठ गद नय विकी नय १। मन्दा नय १ कय १ उ क्रीक र्मिक युता यसा। गितमन्दा
 यातुयान उ क्रीक ला वकी वसु १। रुन्दा वकी दनी वृक त्रु ला जी वनिक र्मिक। वसा दनी किन त्रु ला उ पूवी त
 निक्का का १ मका। जीवनिका सामवली तिन स्या मधुय क्रीक। मधुव वी मधुन सा माव दान उ नी प्रुता। मधुलिका
 धन १ रुनी। मकली पी त्रु वकी पि या १ मय विद कवी रुयनी। उयसी तसा। उकासी लाया यउली छाया नावन
 निकिका। वद १ कठ रु नर १। मका थारिणी कदु थारिणी। मस्या पिना कय तदी वक्रामी न कला दनी। शालुका
 ऊती वक्रामी कदु ना या वया यणी। पयथा काशू क सिमि १ कयिक कृन्व मकली। विजायति यान्य मधी य वकी न

सुद्धरयाम

स्वनीवृत्ता। प्रत्यक्षेण सुखं भवति तत्रैव ननु भवति कथं भवति। अयमात्मनो भवति तत्रैव ननु भवति कथं भवति। यत्

बुद्धमहिम्नात्मकम्

कृष्ण की गयत्री तिनिहा खनमः ॐ नमो ॐ कादावर्षा यद्वा राग्यावर्षा यद्वा ॥ श्री नवती वाह्य ॥

तन्मया ताम

प्रत्यक्षियात् प्र

कंठ्ये नवर्द्धकाः । मरिचिकादिकमात्रिणी । समनी कालमयिका । मधुकवली तलीनी । तलीयाउनपत्नी । या

५-१३२५४

सायवा सादृशा १॥ पञ्चमसः कुम्भकं १॥ भादिनी ककुनाई नका समूदा कादुना लला ॥ यद्वियन्ती यथक यन्ती ॥

万应回春膏

निष्कलत्रिद्वि

विषय की द्विवर्तिका। काकू विना सिंदूर की कलसिद्धा वनिम्बूला। निदिब्धिका स्युषा व्याघ्रा दहती कलक

विष्णुसहस्रनाम

विका। प्रचोदनी कुलीकुडा दूषाभा नाष्टिक संयि। नीली काला व्रीग विका। ग्रामीनामधूयविका। वक्रनी

भाषा ०१

सु. ५०

30

वसुसिधायाम

शीरुलीपुष्पापूनीकालावतीलिका। अश्वल्लुङ्गः। सामनाजी। सुवर्णिः। सामवर्णिका। कालभषा। कसूरु

वृद्धि विद्युत्

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

लावाण्डा यतिरुत्थयि। कृष्णयकृत्यवेददी। मार्ग। मेचया ला कण। उमवपियाली। सी। की। काला। थ। रु।

[illegible]

सिद्धिदानम्

ਸ਼ਿਰੁਆਰ ਸ

विश्वनाथं कपिवन्धुं कालवन्धुं । शरणागतं त्रिपुरारण्यम् ॥ उवाच कुरु विष्णुः ।

(द्वितीयः खण्डः)

सात्रिकयान् धर्मसादकं कुरु ॥ १ ॥ सात्रिकयान् धर्मसादकं कुरु ॥ १ ॥ सात्रिकयान् धर्मसादकं कुरु ॥ १ ॥ सात्रिकयान् धर्मसादकं कुरु ॥ १ ॥

अभियस्योनाम

2000

विनिर्माणमिति उच्यते । तत्रैव प्रथमं कथितम् । अतः प्रथमं कथितम् । अतः प्रथमं कथितम् ।

अथ न्यायम्

गायत्रीयाववा नूना षट्पानला वयश्चय को नवाद्वा म्यकसम ४१ नमूला वक्रसूता इहा नूत्रिन्द वन
 वरी मययार्क इरी नयली वा नालय १५ का वरी मय वं व १५ वी वन मय वन वरी वन मय वन

20

पृष्ठ ३

मिव कि सीया नाम

वया नाम

सुत दयानाम

दानु रुद्रिद्रायर्जुनी संयौ वयो वर्ण धासर्जुनी ^{आरु मयामाम} (गालामी गतय वि का) शुक्रादेमवती वेद्य मात सिद्धो पुत्रा
 सका विषा इन्द्र स ४ सिद्धा सा वास का वाजि दत्त क ४। ^{अश्वना नित्रि क नीसा} द्वि यु का ना इय ना जिता।
 रं कु ग ना तु का (कु रु) ४ का किला रु कु न कु ना ४। ग स य ४ सा द्वा ग नि वं शु ण म ध्व वि का मि सा। मि ध्व या ३
 यौ ध सी कु (कु) व द द ४ सु क सु ही तु ग। सम न दू णी ^{मि म र द व य न म} धा वे ल म भा या चि त्त त तु ला। ग नु न ध्व क मि द्यु ध्व
 वि उ र्म यै न यू स क। ^{वि शि ष्ठ या नाम} वाला वा शाल का घ ण ^{द्वि ता न ग न म} न ता उ न न यू षि का। म द्वा का ^{मि ध्व क नाम} म सु नी या का सा द्वा म ध्व न
 स ति च। स द्वा न रु ति ४ सु व रा वि द्वा वि द्वा वि द्वा। ^{द्वे र} गि त लु प्र व नी ण मा या लि ^{मि ध्व क नाम} (पो) तु स ध्व नि का। काला म

पृष्ठ ४

३७

५

१०

कुष्ठ १ तयानाम

कुष्ठ २ मिमि यानाम

हृद वि द ला र्ध च ला का त म धि का। म ध्व क की ग क य वि म ध्व का म ध्व य वि का। वि द वा त्री की व षु कें कु ग र्ध
 क्राष्टी च या मि ता। अ या की न वि द वा त्री सा त्म दा ^{वि द वा त्री} ध्व ना कें ग नि षि का। ला र्ध सी णा न दी ना य पि यो ली ४ रु
 ला द नी। ख ना णा का ल ती दी धा म ध्व नी ला व म रु क ४। ^{म ध्व ना न ना य} (ग) यी णा मा ण नि वा सा द न नी ल ल ण नि वा।
 या ष्व म ध्व ४ सि द्धि ले षो व द न या द्वा य ४ म। क द ली वा त व व षा न का मा वा रु म रु लो। का षी ला म र्म य लु पु
 का क म मी स रु य पि। ^{उ र्म य नाम} वा र्क का दि तु ली सि द्हा रं कु का द्वा य ध पि नी। ना कु ली स न सा ना सा स ग णा ग ण ना कु ली
 । न कु ल का कु ज नी का कृ पा का स व हा व सा। वि द नि ग णी ^{कुष्ठ ३ तयानाम} रु म ती ग ल य नी ^{मि म र द व य न म} सि म ध्व वा। तु लि के त्री स म रु र्क

७

20

15

10

5

कदसयनम

वनम

नमो भगवते

कदमप्रदयनाम

कर्मसायनमिच । ताननजो पुसावना ॥ ६ ॥ मी पुस सहा वृत्त ॥ गृहीतकी नागवला प्रयाज सु मदेयुका
 । सामायेवायावक ॥ सात्मरुजालासयीनक ॥ श्रीस्त्रीयठालिका जाली नादया रमिरुमूका । सात्मरुलिक
 निगिरवा काकाही काकनासिका ॥ साभायदा पुसवरा ममती तालमूलिका ॥ पूरुगमी विखावी सा (मिडि)
 काकाविहसम ॥ तानुलवला तानुली नागवला योधिजा । रुनन नगुका कीकी कयिला ससायिनी । पुलवा
 रुकमेलय सुगविहनितालकी । तालकका ॥ पालकी मकन ॥ कन्दकन्द ॥ वाला वलवहिनि दिव्यकमी न
 नामच ॥ कालानुसायि वृद्धा मयूषा सीत विवानिच ॥ लिलय तालयली पुदला मयकुटी मना । मशिनी मजरा

गीत

३२

अकपलना

अभिमान

कृणुसवरा सुनरी नसा । सहनन कन्दनकी भलकी लादिनी मिच ॥ अग्नि काला सु रिक्कु धातकी कण
 युषिका । युधीका वन्दु ताले ला निक्कुटि वृद्धा लीधसा । गृहीतयकुष्कि काठुला कानती प्रियुठा मृष्टि ॥ या
 धि ॥ कृष्टया निरावा वाय्या कलम मयल ॥ गन्विनी चीनयुषी सा लक्ष्मी नयथ विगुनक ॥ जाग मलो ॥ ३ ॥
 यागला निवागामलकी मिच ॥ युषी पुत्री क कन्दय मथ पुन ॥ कवनक ॥ कवि ॥ ककु ॥ कानलका नदी व
 क्रीधनाकसी । चक्रामन रुत्री कर्म द्युपु गगलामका ॥ यापुर्धवा यन रवी कन ॥ कंकानक ॥ शुवि
 नाविदुमलागा कयागामि नेदीनली । धमनी जनकही व दुनरुद विलासिनी ॥ छुकि ॥ १ ॥ य ॥ कुन ॥

नमो भगवते नमो भगवते

centimeters 5 10 15 20 25

20

15

विष्णुसहस्रनाम ॥ १ ॥

काल कल नख मधारणी। काशी मस्तुतुवनिका मृगाल कसनाकुज। कूट नरु दहायुर्व तासयं यति
 बलवं। युव (मयूर) मानद केवली मरुको निच। शुक्रियल्लु कंतर्दि ४ युष्मो न रादकुन। मन्त्र
 तातुपिणुनाय क्का दवीलनालय १। समुद्रा नावधुकाटी वसील (कि) यिक लयि। तयस्विनी ज ठामीसा
 जटिला सोमना मिशि। लकुण सुकट र्ग र्ग खव (क्ष) र्व नातीक। कचु नका प्रो विलक १ कात्य काव धम
 र्ग क १। आय (क्ष) जातिमण सु नेजा गोसधमी सध। काखीयण युष्मादि गधुतीगालमानिय १। विहाला
 धिलिखोनका र्गतिनी गधुयुष्मायि। साद कगन्ध कगला युष्मावगी वृद्धा नक १। रु (नी) द्राक्का तुमत्या की

३३

७३

10

5

वयस्का सामवल्लगी। यदुय धी मेमवती। खरु की नीदि मावती। हययू कील काम्वाजी। माषय धीम
 हासहा। रुठिक नीन करुसा। विमिकापीयूय धीयि। वरुना कव नीलुजी। खनयूष्मा जगन्मिका
 जलाय धी लसुवहा। यामीयू कनसावसा। वा (के) नी वृकि कादन। गभंम्यसा सुसागिका। स
 दसव सीवू काम्वा व तस ४ गत व धीयि। नमस्का नी गधु काली। समझी खदि नीययि। जी
 वनी जीवनी जीवा जीवानी या मधु वसा। कूर्चुणी धी मधु कन ४ ग ४ क हा की जीवका
 कि नाहति काह निम्या। नायति का थ मरुत्तुले क ४। निवृत्ता दनि कायय। कु धु दम्वन य
 विमहा सात लहात्र। रुनाय म्क (गी) ययि। अदहाली सादुसा वयसा थ मरुत्तुले क ४।

centimeters 5 10 15 2.0 2.5

20

15

शी ४॥

३३

का २

पुष्पमय

भुवि। अऊमादातुगमभा उद्धरकीयमानिका। मूलयूक्तवकाभी नयनयगलिषीकनी। अ
 यथाचित्रनायका, चात्रपीयद्रवात्रिणी। कामिस्व ४ कर्क ४ अश्वि ४ तमो ४ वनी ४ एषि। पुष्पना उद्धर
 गजा, दद्रुयुध कसर्दक ४ यन्माह उमराय ४ यलायु सुसु कन्दक ४ लताक ४ द्रुमो ४ तनु ४ रुत्रि ४ तथ ४
 महोषधं। ननुनं ४ अनात्रिषू मलाकन्दनसानका ४ यूननैर्क ४ तु ४ अथ ४ विनुनं सुनियर्क ४ सा
 दानक ४ भीतलाय नाजिनां नानव ४ पि। यावावगादि ४ कटही, पिष्ठा ४ अतिष्ठाती लता। वार्षिकं गायमाग
 सा ज्ञायकी नीवलरुद्रिका। विषयकं न प्रिया ४ पि ४ वी ४ ना ४ व ४ प्र ४ ए ४ पि। मार्क ४ वा ४ रु ४ द ४ वा ४ उ ४ सा ४ का ४ क ४ मा

१५४

10

5

अनामिका

अथ ४

चीतुवायसी। गतयूषा गितकृता, गिच्छुगमभूना मिसि ४ अवाकूष्ठा कात्रवीच, सात्रभा गुयसात्रि
 वा। गसांकठमूनां नाज, वलाहदवल ४ ए ४ पि ४ अनी ४ उ ४ क ४ न ४ जनी ४ उ ४ रु ४ च ४ व ४ र्ति ४ नी। सस्य ४ अथ
 सठागन्ध, मलायद्रुकि ४ ए ४ पि। कर्बू ४ ना ४ पि ४ य ४ ला ४ अ ४ पि, कालवल ४ क ४ धि ४ सु ४ क ४। सखवी ४ चा ४ थ ४ कूल
 क ४ य ४ ठा ४ ल ४ रि ४ क ४ क ४ य ४ द ४। क ४ य ४ ना ४ उ ४ क ४ मु ४ क ४ का ४ नू, विर्वी ४ नू ४ क ४ क ४ ठा ४ मि ४ यो। ४ क ४ क ४ ४ क ४ द ४ रु ४ म्वा ४ सा
 कुम्भला ४ च ४ नू ४ स ४ मं। विगंगवाकी ४ अ ४ द ४ म्वा, विगाला ४ लि ४ न्द ४ वा ४ नू ४ नी। अ ४ अ ४ य ४ ४ अ ४ न ४ ४ क ४ न्दा, ग ४ उ ४
 न ४ मु ४ स ४ म ४ पि ४ ला। क ४ ल ४ म्बू ४ ए ४ दि ४ का ४ म्नी ४ तु, मूल ४ क ४ हि ४ ल ४ मा ४ चि ४ ता। वा ४ सू ४ क ४ अ ४ क ४ रे ४ दा ४ स्य, द्रु ४ वी ४ गु ४ भ ४ ग ४ य

20

15

श्री १॥

विंका सिद्धमवीर्यां राग्विषां नृपाननाथसासिना। मलामागतावीर्याच, गलालागकलादकः। कन
 विन्नामयनामां मूकामूककममियां। स्याहं मूककामन्दा, दृगलाचकलाच्चण। विंभालकानकमात्र
 लुचिसानलनधकाः। गतयवीर्यावरुला, वेदमसूत्रनजलाः। वलवः कीचकास्य, थिखिनलपनि
 लाहता। गकिन्नापव्ययनूषी, गुल्लुसूजनकः। तदेमुधमनषाट, गलाथकागममियां। ॐ कृण
 म्भ्यादगलः ४ पं सिरुमि तु वल्लजाः। नसान ॐ कृणुहं ४ यः कानानकादयः। स्यादीवर्णवीनन
 न, मूलं स्यामात्रममियाम्। अरयंतलदसेय, मंम अलंजलाथय। लामकूकलधूलय, मवदाहं

नाम २

१५

या ३

10

5

सकाय(ध)नलादयसू लंगमूः क्षामाकंपुमखात्रयि। अमीकर्मकू(ध)दक ४ पविगमथककृणं
 । योत्रमोयधिकक्षाम, देवउमकंरोदिष्यः। कृणानिच्छुगालथो, मालागलककूकृ(ध)। मर्षावाल
 लंघासा, यवमंगलमकुर्न। गलनांमंदनिसूक्ष्म, नशामुनउमंदनिति ४ गलनाकादयसाला, नात्रिक
 लमुलाङ्गली। धाञ्जुपुग ४ मूका, गुवाक ४ खयूनास्यतु। रुलमंदेगमंतच, रिकालसहितामुयः।
 यङ्कू ४ कतकीगाली, खङ्कू ४ वीरगल ४ डूमा ॥ ॥ ॐ तिवनोषधिवर्ग ॥ ॥ सिंहांमृगन्दुः
 पचासा, रुयङ्क ४ कगहंतीरुत्रि ४ गधू ४ दीपिनोयाधु, गत्रडूमुमभदन ४ वराह ४ सुकना

च० ४० काल० याग० कि० त्रि० कि० टि० १० दंष्ट्री० धा० धी० सु० व० ला० मा० का० उ० ह० दान० व० ल० यि० क० यि० य० व० ग० य०
 व० ग० ग० म० ख० म० ग० व० ली० म० ख० १० म० क० टा० वा० न० १० की० ल० म० व० नो० का० अ० थ० र० ल० क० । म० द० क० र० ल० र० ल० क० ।
 ग० लु० क० ख० क० ख० कि० नो० । ल० ना० या० म० दि० वा० वा० ह० दि० व० ल० क० स० त्र० से० त्रि० रा० १० मि० यी० मि० वा० ह० त्रि० मा० य० । ग० म०
 मा० य० म० ग० ध० र० क० १० ग० म० ल० व० क० का० य० र० र० र० व० उ० म० क० १० उ० अ० वि० ज० ला० मा० ऊ० ना० व० ष० दं० ग०
 क० अ० ख० य० क० । य० या० लो० ध० न० लो० म० न० । लो० ध० या० लो० धि० का० ल० ज० । ग० म० वि० लु० ग० ल० स० ल० मि० ग० ल० ली०
 ग० ल० ली० ग० ली० । या० त्र० यु० मी० द० ग० म० तै० १० का० क० व० ली० द० ग० ल० क० क० १० मृ० ल० क० न० क० वा० ता० य० ह० त्रि० म० जि०

[illegible]

20

15

गी १॥

३१

^{विष्णुनाम} ^{कथना} ^{विष्णुनाम}
 लोमुवृश्चिक। यात्रावतः कलत्रवः कथानां थं गणनः यत्नी ^{विष्णुनाम} नउलूकमु वायसाः
^{विष्णुनाम} ^{विष्णुनाम} ^{विष्णुनाम}
 नातिपत्रको। आद्याठः स्याद्दुनदाउः खंजनीठमु खंजनः साहय्यमु कंकः स्यादथ
^{उत्तर} ^{विष्णुनाम}
 यावः किंकीदिविः कतिङ्गुलं धूम्याठा अथ स्यात्तु ययकः दावाद्याठांथं सात्रङ्गः साक
^{विष्णुनाम} ^{विष्णुनाम} ^{विष्णुनाम}
 कंभगकः समाः ककवाकः सुमुकूठः कूकूठश्च नमयूधः चटकः कनविङ्गुः स्यात्तु स्या
^{विष्णुनाम} ^{विष्णुनाम} ^{विष्णुनाम}
 म्नीचटका तथाः यूमयत्तं चटकैः स्यात्तु यत्तं चटकैः वहि। कर्कः चटुः कनटुः स्यात्तु कक
^{विष्णुनाम} ^{विष्णुनाम} ^{विष्णुनाम}
 कुकरोसमी। वनयियः यत्रतः काकिलः यिकः स्यात्तु काकिलः कनटुः चटुः वलिपू
^{विष्णुनाम}

10

5

^{विष्णुनाम} ^{विष्णुनाम} ^{विष्णुनाम}
 हसकन्यजाः धांकोत्तद्यायत्रतः दत्रिमुक्तायसा अयि। डाढकाकमु काकासा दाह्यूरु
^{विष्णुनाम} ^{विष्णुनाम} ^{विष्णुनाम}
 ४ कालकः कः आतायि विलो दाकार्यः चलोकीलेहु कोसमी। कूकूकोत्तथवकः कंक
^{विष्णुनाम} ^{विष्णुनाम} ^{विष्णुनाम}
 ४ युकनाकमु सात्रसः काकंभकंभकवाका तथा डादयनाकः कादम्वः कलहंसः
^{विष्णुनाम} ^{विष्णुनाम} ^{विष्णुनाम}
 स्यात्तु डादयनाकः कनरोसमी। हसाउः यत्रतंगत्रतं यकाङ्गा मानसोकसः गाऊहं सामुनं च
^{विष्णुनाम} ^{विष्णुनाम} ^{विष्णुनाम}
 चत्रलोहादिनेः सितानेर्मन्त्रिकोत्तः धारुनाकुसितेनेः गत्रात्रिनाटिना
^{विष्णुनाम} ^{विष्णुनाम} ^{विष्णुनाम}
 विष्णुवसाकाविसकटिका। हसस्यथाविद्वतः सात्रसस्यलूकः डाऊकाजिनयगा

32

का ३

20

15

10

5

का ४

श्री ४॥

५०

कर्त्तृसायलिकाधूरा धिविनाथस्य वना। पतिवनाचवर्थाच कलमी कलयालिका। कन्या
 कुमात्रील्लेखीयु नग्निका नागताले वा। ह्या नक्षमा दृष्टवज्ज। तत्रेण्युवति ४ सम। समास
 वाङ्नीवधू। श्वित्रिणीयुसुवासिनी। वृद्धायगीकामूकास्या दृष्टस्य नीयुमामूकी। कानाथि
 नीयुयायाति संकर्म सासिसात्रित्री। युष्यसीधमिदीवध्व कसती कलदंलना। श्वित्रिणीयी
 गुलायस्या दग्धिविगिगुनाविना। अवीयानिष्टातिस्त। विग्यसाविधवसम। आसि ४ सखा
 ययस्योय यतियली सदलका। वृद्धायत्रिकीयाङ्गीयु यद्रूपद्रुधीमति। गूडीगूडस्य रा

योस्या नूडांतज्ञाति ववरा। आसिनीयुमहा गूडी जातिर्युयागया ४ समा ४। अयो दीस्यमम्या
 स्या लुगियादृष्टियध्वि। उपाध्यायायूपाध्यायी स्या दावाया विरसंन ४। आश्याधीरुय
 याण स्यादयी दृष्टियी तथा। उपाध्यायानूपाध्यायी योंठामुयूसल दध। वीनयलीवीनरा
 यो वीनमातायु वीनसु ४। जानयत्यायुजाताच यसुगाययसुनिका। मुनिनग्निकाकाठवीत्या
 दूतीसंयत्रिकसम। कस्यायध्व वृद्धाया कायायवसनाधवा। सेत्रधुयनवधमसा स्ववध
 शिल्यकात्रिका। अस्मिन्नीस्यादवृद्धाया युष्मन् ४ पुनचात्रिणी। वात्रमुनिगदिकावध्व नूया

॥ ४॥

[illegible]

20

15

श्री ॥

पुंयनि ॥ यितामरु ॥ यितुयिता गयिताययितामरु ॥ माणुर्मगा मराद्यव सयिअमुसनारुय ॥
 समानादर्य ॥ सोदर्य सगर्ह्य सरुजा ॥ समा ॥ सभगुवाधवकागि वधुसुखजना ॥ समा ॥ इति
 यवभुतातया कुमाहावसमरुया ॥ भव ॥ प्रिय ॥ यतिरुली जानसुययनि ॥ समी ॥ अमनेजा
 वरु ॥ कुलु मरुतुनि (मसक ॥ अग्रीया अग्रीया अग्री तमिनी अतनावेतो मातायितनेपि
 मती ॥ स्वयं यद्यु सोयुयो योयुयुयुदहिताचादनतीऊमगिजाया यतीलार्थायतीवती
 ॥ गतीमयाऊनायु ॥ स्या दल्य कसलोमिया ॥ हतिमासावेजनना गतीयुल ॥ मोसमी ॥ गती

५२

मातरयितत्रोवनी २

10

5

श्री २

यायकनि ॥ यद्यं यद्यु कीवन्नयूसकी ॥ गिगुल्ल (मोगव वात्य कायुर्थयोवनसम ॥ स्यात्
 स्मदिरनुवधर्त्त वदस्यठवाद्ध कश यतिनंजन सांक्ष कगदोविशसाऊना ॥ स्यादूला
 नगयाठिमा सुनयावसुनैधयी ॥ बालमुस्यामानवका वयसुसुत्र (वायुवा ॥ युवया ॥ सु
 विना वद्धा जीनाजी (धुऊननयि ॥ वधीयान्दगमी शीयान् पर्वउसुगिडीयउ ॥ उद्यन्यऊ
 स्य ॥ कनिष् यवीयावनजाऊ ॥ असांसादुवत्र वकातो वलवासांगसांगसं ॥ गुन्दिलमु
 न्दिकमुन्दी वदल्लुकि ॥ यिविहिल ॥ अवीतीतावनाटय विवतानतनासिक ॥ कगव ॥

श्री ३

20

15

कगिक४कगी।वलिनावतिर४समो।विकलाकृष्णयागु४खद्योऊस्रव्यवामन४खनवा४स्य
 खनवास४विग्रमुगतनामिक४खनव४स्यखनवास४यु४उगतजानूक४उद्धकृ४उद्धजा
 न४स्य।सं४सं४रुगतजानूक४स्यदउवधिन४कृ४गयुल४कृ४कनकृ४वि४ययि४नस्यतनो
 ४॥१॥४यंगोमू४मु४मु४मु४ति४वति४क४क४न४ख४उ४ख४ऊ४मु४यू४जं४या४व४या४४ऊ४द४ल४४काल
 क४यि४यू४सितक४सितकालक४४नामय४स्य४दा४या४ध४चिकित्सा४नू४कु४ति४क्रिया४४ख४ओ४ष
 ध४शे४ष४छा४न्या४गदा४जा४यू४त्रि४त्य४यि४।मु४त्र४गु४जा४या४य४ता४य४।या४ग४या४धि४गदा४मया४४४य४४४भ४व४व्य
 पू२

४३

10

७

यक्षाव४युति४सो४य४मु४यी४न४स४४मु४द्र४त४द४व४४यू४सि४का४से४मु४द४व४थू४४यू४मा४ना४४भा४रु४मु४व्य४य४थू
 ४४४४थ४४पा४द४स्र४टा४विया४दिका४किसा४सं४सि४ध४क४कृ४कृ४या४मया४सा४वि४च४शिका४४क४धु४४ख४दू४४व
 क४धु४या४वि४स्र४टा४४यि४ठ४क४मु४यू४।वु४ध४४४क्रिया४मी४म४म४न४४क्री४व४न४जी४व४४यू४मा४ना४का४४भ४म
 धु४र४क४४कृ४४वि४गु४द४ना४म४का४गी४।ज४ना४ह४मु४वि४व४४स्य४।कृ४ह४दी४नू४कृ४यू४वो४यु४वा४हिका४यु४कृ४दि
 का४व४मि४गं४मु४।यू४षा४मु४य४म४थू४४स४मा४४आ४धि४दो४रो४वि४ड४धि४४मु४।काल४म४द४रा४ग४न्द४या४४ज४म४नी
 म४ग४कृ४कृ४स्य४।स्र४व४४गु४का४व४ध४मु४यू४।या४ग४दा४य४ग४द४का४ना४।वि४ष४४वे४या४वि४कि४स४क४।या४रु४नि

20

15

10

5

वीरुज

रामयः कल्पः उल्लाघा निर्वर्णा गदात्। ग्रानस्ता सुश्रामयावी विरु नावाधिताय दूषी आनुनाः
 यतिनाया नः समोयामन ककुनी। ददुधोददु नागी स्या द भ नागयुता गसः वातकी वा
 न नागी स्या सातिसात्राः निसात्रकी। स्यः किना कचल यिल यिलाः किनः किनायामी उम
 रु उमादवति। स्यालः स्यालः कही। न्युक्तुः न्युजावद नालोतु हिलु हिलो। किला
 सी सिधासाः स्याद दूका सा मरु मरुकि गो। गुर्क न जा न सा वीथि नियाधिय। मायुः यिरु
 करुः स्या मिया कुल ग स्य म्या। यिसिर्त न तल मां स यल स कुय मा मिष। उरुयः युष्क

ग्री ४॥

६५

मां स्या रुदल्लुर्त गिलिगकी। नृषि न स्या हिनामु नक कतजः भदिनी। वृकाय मान्द दयः द
 नदमु वया वसा। यम्भ डी वा सिनाम न्या नाजी तु धमनिः भिना। गिल क कोम स सिक्कः भद
 किर्द मला मिया। अर्क यूरी तं गुलामु यी हाय स्य थ वससा। स्यायः मिया काल खलु यकती
 उ समं भम। स्यिका स्या निनीला सा दूषिका नयथा मरु। स्यु यमा वड जा या यस्म जोगम
 लंगदत्। यूरी यं गृथं वरुस्म मं मु विष्ठा विष्ठा मियो। स्यात्कय्य नः कया लोमी की कर्ण क्य
 मं किय। स्या कूरी या क्कि क कालः यथा क्कि तु क गनू का। गिना क्कि निक नाटिः मी याष्क

20

15

10

5

कुल्यः कत्रभाखाः ४ यूस्य कुष्ठः युद मिना। सधमानामिका जायि, कनिष्ठा वंतिना ४ उमा
 त्। यूनकवः कत्रनुक्षानखी मुनखशो मुया। युदे ४ गाल (अकभू) सुऊ न्या दियुत तनी। अ
 गुष्ठ संक निष्ठा, दित सिद्धाद ४ अहु स ४ या (सेव धेट युत ल) अरु सा विरु तां तु लो। दो सीरु तो सीरु त
 ल, युग सो याम द (लो) पा सि निरु कु यु स त, सो य ता व ४ लि ४ यू मान। युका श्वा विरु त क या रु स
 मूष्ठा गु व द्रु मा। सन लि ४ स्या द न लि मु, निरु निष्ठा न मूष्ठा ना। वा मा वा का स क न या, सुत या मि यी
 म क री। उद्ध विरु त ४ ४ या मि, नु मा न यो नू र्ष त्रि य्। क (अ) म ला थ गु वा यां, मि या धि ४ क ध न र्पा

४३

या क मू गी वा ति नखा सा, व दू र्धा ठ क का ठिका। व कु स्य व द न तु यु, मान न ल य न मू र्वा। क्री व द्वा
 लं ग न्ध व रु, धा ल ना ग न च ना भिका। उ शो ध यो गु न द न, उ दौ द ग न वा स मा। अ ध ४ स्या चि वू र्क ग लो
 क या लो ग ल्य ना रु नू ४ न द ना द ग ना द ना, न द ना स लू तु का दू र्वा। न स रू न स ना जि का, या ना वी ष्ट स रू
 क्ती। ल ला ठ मं लि क (अ) धि, रू द्ध द ग्नां यु वी मि यो। कूर्च म म्मा यु वी र्म (ध), ना न का कू ४ क नी नि का। स च
 न न य न न ग, मी क र्ज व दू र्ज कि ली। द दू र्वा च, शु न ग म्, ना द न यो म म्म यो। अ यो (अ) न ग या न को क
 म क्ती या द द ग नी। क र्मु ग द ग रू (अ) उ, यु मि ४ म्मा गु व र्ज गु व ४ उ म मा र्ज मि नू ४ गी र्म म्म द्वा ना म रू का

उत्तर १०८ नयन पद्यसंग्रह
१०८ नयन पद्यसंग्रह
१०८ नयन पद्यसंग्रह
१०८ नयन पद्यसंग्रह

नीटपूँनपुंसकः। दृणमलिः। मिश्रान्नं। तत्रलाहानमध्वगः। वालयाध्यायात्रितथा। यद्रुया
ध्यातनाटिका। कलिकानालयपुंस्या। लुल्लंकपुंयवर्तः। विवेककं०। रूपा। लघनं स्यात्सिलनि
का। स्यलुः०। यालमिका। धनः०। सुगिका। मोकि के०। रुना। रुनामूकावलीकव। रुनासोसतयधि
का। रुनारुकाय। सिरुदा। रुकुरुका। रुनामूना०। रुद्वरा। रामानवक। रुकावर्थकयधिका। सेवनरु
उमालास्या। सुकविशानिमोकि के०। आवायक०। यात्रिरुयः०। कठकवलया। मिया। कयूनमंझदपुल्ल
अहुलीयकमर्मिका। सार्कनां। गुलिमडा। स्यात्ककलंकनरुषणं। मीकयां। मखलाका। स्यात्सफकात्र

1875

20

युग

मञ्जरीनामयूनसुभा

सनातथा। कीर्तिं वेसाप्रसन्नं चोथं यं सुखां रवतं प्रियं। यादाहदनुलाकाटिं मेष्ठिं शान्तं यं नामि या
 मोरुं सकं यदा कटकं किं किं लीकू उद्यलिका। त्वं कूलं किमिनामानि वमुयानि दंशति यं। वालं
 कीमादिहलनु कार्यासंवादनं चयत्। कोषयं किमिनामाकं नाकं वं मगं नामजं। आनादतं नि
 ष्यायालिं गुरुकं नवामनं। तस्याद्रुममनीर्ययं होतया वमुयार्थं गं। यज्ञार्थं श्वेतकोषयं। व
 इमं लयं मदाधनं। कीमं द्रुमं लस्याद्रुं विनीतं यादतं प्रियं। मियावद्रुं वमुयार्थं दशं। सूत्रं मुयार्थं
 शोकेयं मायामञ्जरीनामयूनसुभा। यत्रिभक्षविभलगा। यद्वलं जीवुवमुं समोनकं ककयं ठो। वमुमांकादनी

श्रीम

४८

10

वासं लं वसनमं धूर्कं। सूत्रं लकं यथा मुस्या दना सिं स्कूलमटकं। निवालं यच्छदयटं समो
 नलकं कमलो। अकरीयायसंघानं यत्रिभक्षनामं धूर्कं। दोयावायाहनासंघो समो ददति का
 तथा। संघानमृत्तनीयं चालं वृत्त्यासकं मियां। नाभनं श्यास्यावत्रला हिमानिलनिवात्रला
 प्रज्ञात्रकं वत्रमुत्तं स्याच्चतुनकं मं धूर्कं। स्यात्तिष्ठायायदीनं तस्या प्राणाययदं हियं तं॥ प्रमुविता न
 मं लोचो द्वाष्ट्यवमुवप्रति। युनिसात्राजमनिका स्यात्तिष्ठनकनली चसा। यत्रिभक्षमां मं ससात्र
 श्यान्माष्टिर्माङ्गीनी मजा। उद्वर्तनाकादनेदं समं अयाव अयव॥ स्नानं चर्चा पुचर्चिर्द्यं स्नास

५२

आपुवक्षिपयसं उवाचोवाचोपदीनं

विमलसुखपुत्रा नमो नमः १३९

नमो विमलसुखपुत्रा नमः १३९

^{कौथयवोधनं} कौथयवोधनं। ^{अनुवाधः} अनुवाधः ^{यद्युसखा} यद्युसखा ^{यजुंशुसिनिमसमं} यजुंशुसिनिमसमं। ^{तमासयउतिलक} तमासयउतिलक, ^{चिउकालिंवि} चिउकालिंवि।
^{वकं} वकं। ^{द्वितीयः} द्वितीयः ^{उनीयः} उनीयः ^{नमि} नमि ^{यामथकुं} यामथकुं ^{कमं} कमं। ^{काष्मी} काष्मी ^{वज्ज्मा} वज्ज्मा ^{निमि} निमि ^{वि} वि ^{वज्ज्वा} वज्ज्वा ^{कयी} कयी ^{ननं} ननं। ^न न
^{कसं} कसं ^{का} का ^च च ^{पि} पि ^{गुन} गुन ^{धीन} धीन ^{सा} सा ^{हित} हित ^च च ^{ननं} ननं। ^{ला} ला ^{का} का ^उ उ ^{कु} कु ^{वी} वी ^{या} या ^{वा} वा ^ल ल ^{का} का ^{डू} डू ^{मा} मा ^{गय} गय। ^स स ^व व ^{डू} डू ^क क
^{वकुं} वकुं ^{मं} मं ^श श ^{सं} सं ^म म ^थ थ ^{जा} जा ^य य ^{कं} कं। ^{का} का ^{ली} ली ^य य ^{कं} कं ^व व ^{का} का ^{ता} ता ^न न ^{सा} सा ^{र्य} र्य ^{क्ष} क्ष ^थ थ ^स स ^म म ^थ थ ^{कं} कं। ^व व ^{मि} मि ^{का} का ^{गु} गु ^न न ^{जा} जा ^{रु} रु ^{सं} सं
^{रु} रु ^{मि} मि ^ज ज ^आ आ ^{रु} रु ^{का} का ^{को} को ^{ला} ला ^{गु} गु ^व व ^{गु} गु ^न न ^{रु} रु ^{रु} रु ^म म ^{सि} सि ^ग ग ^{मि} मि ^य य ^न न। ^य य ^{रु} रु ^ध ध ^य य ^{सं} सं ^न न ^{सा} सा ^ग ग ^ल ल ^स स
^व व ^न न ^{सा} सा ^व व ^{यि} यि। ^व व ^{डू} डू ^{या} या ^य य ^थ थ ^व व ^क क ^ध ध ^य य ^क क ^{मि} मि ^ध ध ^य य ^{को} को। ^उ उ ^न न ^क क ^ध ध ^{यि} यि ^क क ^{सि} सि ^{का} का ^{या} या ^व व ^न न ^{यि} यि ^थ थ ^{या} या ^य य

ग्री॥

४२

^स स ^श श ^{भा} भा ^{सा} सा ^व व ^क क ^ध ध ^{या} या ^{पि} पि ^{गु} गु ^{यि} यि ^{रु} रु ^ग ग ^न न ^ल ल ^{डू} डू ^{वो} वो। ^म म ^ग ग ^{ता} ता ^{रि} रि ^म म ^ग ग ^म म ^क क ^क क ^{सू} सू ^{ना} ना ^थ थ ^{का} का ^ल ल ^{का} का ^क क ^{का} का ^ह ह
^ल ल ^{कं} कं ^{का} का ^ष ष ^{रु} रु ^ल ल ^{मं} मं ^थ थ ^क क ^{र्य} र्य ^न न ^{मं} मं ^{मि} मि ^{या} या ^म म। ^घ घ ^न न ^{सा} सा ^न न ^ध ध ^{नु} नु ^{सं} सं ^{रु} रु ^{सि} सि ^{ता} ता ^ग ग ^{दि} दि ^म म ^{वा} वा ^ल ल ^{का} का ^ग ग ^ध ध ^{सा} सा ^म म ^ल ल ^य य
^{जा} जा ^{रु} रु ^{डू} डू ^ग ग ^व व ^न न ^{मि} मि ^{या} या ^म म। ^उ उ ^स स ^य य ^{लु} लु ^क क ^म म ^ग ग ^ध ध ^{रु} रु ^{नि} नि ^च च ^न न ^{मं} मं ^{मि} मि ^{या} या ^म म। ^{नि} नि ^ल ल ^य य ^{नी} नी ^{गु} गु ^य य ^ग ग ^{डू} डू ^न न ^{क्ष} क्ष ^{नं} नं
^व व ^क क ^च च ^न न ^{नं} नं ^व व ^च च ^न न ^{नं} नं ^{वी} वी ^थ थ ^{जा} जा ^{नी} नी ^{का} का ^ष ष ^{जा} जा ^{नी} नी ^{रु} रु ^{सं} सं ^म म। ^क क ^य य ^{ना} ना ^{गु} गु ^न न ^क क ^{सू} सू ^{नी} नी ^क क ^{क्ष} क्ष ^{से} से ^{रु} रु ^क क ^द द ^{मा} मा ^श श ^{गं} गं
^म म ^ग ग ^न न ^स स ^य य ^{नी} नी ^व व ^{कि} कि ^{रु} रु ^{की} की ^{सा} सा ^{द्वि} द्वि ^{ले} ले ^य य ^{नी} नी। ^च च ^{भू} भू ^{नि} नि ^{वा} वा ^स स ^{या} या ^ग ग ^ध ध ^{सू} सू ^{क्री} क्री ^{वि} वि ^न न ^{वा} वा ^{सि} सि ^{गं} गं ^{वि} वि। ^{सं} सं ^{स्का} स्का ^{ना} ना ^म म ^ध ध ^{र्म} र्म
^{न्या} न्या ^{धे} धे ^{रु} रु ^{त्सा} त्सा ^{तं} तं ^ध ध [ि] वि ^{वा} वा ^स स ^{नं} नं। ^{मा} मा ^त त ^म म ^{ला} ला ^{मु} मु ^{जी} जी ^म म ^{वि} वि ^क क ^ग ग ^म म ^ध ध ^{गु} गु ^ग ग ^क क ^श श ^{यु} यु ^{रु} रु ^{कं} कं ^{गि} गि ^र र ^{वा} वा ^ल ल ^{मि} मि ^य य ^{ना} ना ^च च ^{रु} रु

१॥

ॐ नमः शिवाय ॥ ३५ ॥
 ॥ उच्यते नरयवासा विवकः यथ गतमता ॥ स्याद्विष्णु वचसं वला ॥ अयनद्विनेथा ऊर्लिः ॥ या ॥
 ॥ युक्ता ऊर्लिः ॥ या ॥ १० ॥ विपुषा वक्र विन्दवः ॥ आनया गत न वक्रा ॥ सनैक ल्य विधिवमो ॥ मूखा
 ॥ स्यात्पुथमः कल्या ॥ नूक ल्य मुतता धमः ॥ संस्कार यव वृद्ध ॥ स्यादया कवर्ध युतः ॥ समं तु
 ॥ पादग्रह बध ॥ मरि वादन मि लूत ॥ रिद्रः ॥ यत्रि वाट् कर्मन्दी ॥ यात्रा स्या विमस्कनी ॥ तयस्वीता ॥ ५३
 ॥ यस् ॥ यात्रि ॥ कांक्षा वाचं यमा मूनिः ॥ तयः ॥ कृग सहोदा ना ॥ वक्षि ना वक्र यात्रिः ॥ जषयः ॥ सत्य
 ॥ वचसः ॥ स्नातक स्त्री युत वती ॥ यनि किं न दिय ग्रामा ॥ यति नाय तय व्यत ॥ यः ॥ सुष्ठु ल युत व

॥ अक्षः ॥ न सुष्ठु ल गम्य सो ॥ सुष्ठु ल वं थ विवज ॥ समसः ॥ स्याद्वि यात्रि गमा ॥ यत्रि ॥ युयतः ॥ परतः ॥ पाषण्डा
 ॥ सर्व लिङ्गिनः ॥ यात्रा गम दधु आषाखा ॥ वुत वाक् मु वेगवः ॥ अम्बु कम धु लू ॥ कृष्टी ॥ युगी नामी
 ॥ सनै वृषी ॥ अजिने वर्म क रिः ॥ रूद्रः ॥ रिद्रा क दम्व क ॥ स्या आयः ॥ स्याद्रूपः ॥ सूर्या ॥ रिषवः ॥ सवनैव
 ॥ सा ॥ सर्वे न सामं य धन्वि ॥ ऊर्षी रिष्य य सर्व वम ॥ दगं ॥ यथो धू मा सव्य ॥ या ग्नेय क्क नया ॥ यथ का
 ॥ गत्री त सा ध नाय क ॥ निर्यय क्क म ग य मः ॥ नियम क्क स य क्क म्मा ॥ नित्य मी ग क्क सा ध नै ॥ उच्यती
 ॥ गीय क्क सूर्य ॥ याद्व न दक्षि ण क र ॥ यात्री ना वी त म न्य सि ॥ निवीत क्क ध ल मिती ॥ अक्षु ल्या यती र्थ दे

20

गुहा

वं. स्वल्पाकुल्यामूलकायम्। म^१स्त्र्यकुल्यायेतं मूलं कुष्ठस्य वार्कं। स्यादुक्तास्यैव कर्तुं वक्ता
 सायुक्तामिहयि। दवरुयादिकं तद्वत्। लंके साकयनादिकं। सन्यासवर्णनगनं यमान्यायीथ
 वीनदा। नष्टाग्निः कुरुनासाग। लि^२थस्ययथकल्याणा। वायुः सीत्कावदीनः स्यादस्यैव यानि
 नाकृतिः। धर्मध्वजालिङ्गवृत्तिः त्रैवकीर्णकृतवतः। सूक्तयस्मिन्नसमंति। सूक्तयस्मिन्नूकतिव
 । अंशुमानं शिनिर्मका। ह्यदिगोनीयथाकुर्म। पत्रिवलानुजानूठः। सुष्ठुदावयपिगुदाग्रायत्रि
 विहिमुनस्यायान् विवाहाययसोसमो। तथायपिद्यथाद्वादाययमाः यादियीतनी। वावायाग्राम्

५५

15

10

नाद्विनाट ३

धर्मध्वजं तर्तनिधूवर्तयतत्। त्रिवर्णाधर्मकामाये। श्वरुवर्गः समादकः। सवलेस्वश्वरुर्द
 ज्ञानाः लिङ्गावनस्याय ॥ ११ ॥ बुद्धावर्तः ॥ ० ॥ मृद्विशिष्टिका राज्ञा वादुः कृतियात्रिनाट
 । यार्थिवक्ता उक्तं नृपस्य मदीक्षितः। राजा तु युनगाभयः। सामनः स्यादधीश्वरः। चक्रवर्ती सा
 वेशीमा। नृपा नाम दुलभ्वरः। यनं राजस्य नः मधुलस्यैव श्वरः। शक्तिर्यस्यैव रूपा ना
 रूः। ससमाउथराजकं। राजन्यकं च नृपतिः। कृतियागः। अक्षकुमात्। मन्त्री धीः सचिवा मार्याः। ना
 कर्मसचिवास्तः। मदासागाः युधानानि। यूराक्षः मुयूराहितः। द्रव्यानि वावदा नार्थः। प्राद्विवार्क

5

20

15

^{नयलक्षणा} नयलक्षणा ^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण ^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण ^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण ^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण ^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण ^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण
^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण ^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण ^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण ^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण ^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण ^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण
^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण ^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण ^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण ^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण ^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण ^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण
^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण ^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण ^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण ^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण ^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण ^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण
^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण ^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण ^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण ^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण ^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण ^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण
^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण ^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण ^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण ^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण ^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण ^{रुद्रकृष्ण} रुद्रकृष्ण

७१

10

^{लिका} लिका ^{अधः} अधः ^{कृष्ण} कृष्ण ^{वाहिक} वाहिक ^{युतिमानम} युतिमानम ^{स्य} स्य ^{यत्} यत् ^{आसनी} आसनी ^{स्कन्ध} स्कन्ध ^{दण्ड} दण्ड ^{स्या} स्या ^{त्यक्षक} त्यक्षक ^{विन्दू} विन्दू ^{जाल} जाल ^{कीय} कीय
^{कृष्ण} कृष्ण ^{गण} गण ^{पाण्ड} पाण्ड ^{राज} राज ^{दक्ष} दक्ष ^{राग} राग ^{मुखा} मुखा ^{ग्रतः} ग्रतः ^{द्वोर} द्वोर ^{वर्ष} वर्ष ^{भू} भू ^{ज्या} ज्या ^{दि} दि ^{दक्ष} दक्ष ^{भग} भग ^{वत्} वत् ^{कुमार} कुमार ^{नारु} नारु ^व व
^{दक्ष} दक्ष ^{माला} माला ^न न ^{वन्ध} वन्ध ^{सु} सु ^थ थ ^म म ^{द्व} द्व ^ल ल ^{अन्ध} अन्ध ^{कानि} कानि ^{गला} गला ^{मु} मु ^{स्या} स्या ^{दक्ष} दक्ष ^{भग} भग ^{मु} मु ^{विद्य} विद्य ^{या} या ^{शू} शू ^{वाक} वाक ^{का} का
^{वत्} वत् ^ग ग ^{स्या} स्या ^{लक्ष} लक्ष ^{ना} ना ^{सू} सू ^{ना} ना ^{सम} सम ^{प्र} प्र ^व व ^भ भ ^स स ^{त्र} त्र ^{दा} दा ^म म ^{द्व} द्व ^य य ^{त्रि} त्रि ^{साम} साम ^क क ^थ थ ^{द्व} द्व ^{या} या ^{शू} शू ^{वी} वी ^र र ^{त्व} त्व ^{सा} सा ^न न ^ह ह
^{स्य} स्य ^म म ^{वा} वा ^{जी} जी ^{कु} कु ^ग ग ^ज ज ^व व ^ध ध ^{नी} नी ^{घा} घा ^ट ट ^क क ^{या} या ^{ति} ति ^{गु} गु ^न न ^ग ग ^{गु} गु ^न न ^ग ग ^{मा} मा ^{शू} शू ^{वा} वा ^{जि} जि ^{वा} वा ^{द्व} द्व ^ग ग ^ध ध ^व व ^ह ह ^य य
^स स ^ध ध ^व व ^स स ^फ फ ^य य ^{शू} शू ^आ आ ^न न ^{या} या ^{कृ} कृ ^{सी} सी ^{ना} ना ^{सू} सू ^{र्वि} र्वि ^{नी} नी ^{ता} ता ^{सा} सा ^{धू} धू ^{वा} वा ^{दि} दि ^न न ^{शू} शू ^{वा} वा ^{ना} ना ^{यू} यू ^{जा} जा ^{या} या ^न न ^{गी} गी ^{का} का ^{काम्बा} काम्बा ^{जा} जा

20

5

५११

युष्मद्युत्तमवर्णाः। यत्र यत्रावाहनं यत् रुद्धे नीतकममि याम्। आध्वन्यः दक्षिणको दक्षिणादा
 निष्ठादिनः। नियन्तायाजिगीयन्ताः। सूतः कृत्वा यसात्रयिः। सद्यः दक्षिणको वः। संख्यात्रयः कूटस्मिन्
 शत्रयिनः। सन्धनात्रादाः। अश्वत्रादा मुसादिनः। रुढायाः अश्वयादात्रः। सनात्रादा मुसेनिकाः। सना
 यी समवलायः। सेनासु सेनिकाश्च न। वलिनायः सदमुद्यः। तसादमुः। सदमुद्यः। यत्रिषिस्तः। यत्रि
 यः। सनानी चोदिनीयतिः। कंचूका वात्रवाधमि। यन्तुमः। संचूकाः। वधुकिं तत्सात्रसनः। मधि
 काः। अथगीर्षकी। गीर्षध्वं यमित्रमुथः। तनूतं वर्मदं गनी। उत्रश्चूदः। कंकटकाः। उगत्रः। कवचाः। मियां।

५२

10

5

आमूकः। युतिमूकः। यिनद्वः। यिनद्ववत्। सन्नद्धावर्मितः। सुज्ञः। दं गिगीयूठककूटः। गिष्ठासू
 कादया वर्मः। रुती कावचिककूटः। यदातियक्रियदगः। यदातिकयदाजयः। यद्वध्वयदिककूटः। य
 यादार्तयलिसेदतिः। गमुजीवकाद्युष्टः। यूधीयायूधिकः। समाः। दूतदसूः। सुयुथागः। विमि
 खः। कृत्वा यूववत्। अयत्राद्वः। सौलः। अश्वः। गसायकः। धन्वीधनूषाधनूकाः। निषंभमूधनू
 द्वः। स्यात्काद्युवामुकाद्युनः। गमकिः। गकिदुतिकः। याष्टीकयात्रवधिकोः। यष्टियत्रमुदति
 को। नेमुगिकासिदतिः। स्यात्समोयासिककोनिको। वर्मरुलकयाविः। स्यात्सनाकीवेजनि कः।

20

15

ग्री ४

अनुपुवः सदायः नूयनां शिवः समाः यत्रागः सत्रयः गतः सत्रः यत्रः समाः यत्रागः सत्रयः
 रागमी मन्त्रगमी मन्त्रः जंघालः तिजवमुल्लो जंघाकात्रिक जंघिको तत्रहीलत्रिता वगी
 पुजवी जवना जवः अथायः गकतं ऊर्तु ऊया जत वा मा ग क जेगमु जता या ग क ह्यलं विद्विषतः य
 ति सांय मिगो य मिगीया अय मिगी धं ह्ययि उऊ ह्यलः स्या दूऊ ह्यी य उऊ ति ग या न्वितः स्या
 दूय ह्यनूय सिला त्रयिका त्रयिना त्रयी काम क्काम नू कामी ना क्कय नीन स्या ह्यी सूना वीन य वि
 काका ऊता जिषू य जिह्वः सांयूगीना त्रय साधूः गमु जीवा दय मिषू धडी नी वाहनी सना य

५०

10

5

तना नी किनी चमूः वरू धिनी वलं से न्यो चका वीनी कर्म मियी वूह मुवल विनासा रुदा द छु दया
 यमिः यया सात्रा वूह या विः सेनायः य विग्रहः जंके रो क रथा गु य यरिः य य दानि काय
 ह्यो मिगुलोः सवेः कुमादाखाय यारुनी सना मुखं गुल्लगलो वाहिनी य तना य मूः अनी किनी
 दगानी कि न्या को दिव्य थ सम्यकि सैय लिः यी य लक्ष्मी य त्रिय ह्यी विय दी य द्यो आयू ध मुय द रवी ग
 मुमं मुमं थ मियी धनू य यो धनू ग रासन काद छु कामू कः ह्य सा यो थ क र्क स्य का ल य र्क ग रा
 गनी कयि ध ऊ स्य ग छी व ग छि वी य न य स की काटि र स्या ठ नी ग य त ल स्या घा त वा र वी ल स क

20

15

श्री ४॥

५१

सुधनुर्मध्यं मोर्षीं शानिभिनी गुदां स्यात्पुण्यालीरु मालीरु मित्यादिस्नानयंत्रिकां लक्ष्मीं लक्ष्मीं गत्र्यां
 व. गत्र्यासंडयासनी यषत्क बाध विभिषो. अजि कर्ण खगं शुभं कालं मार्गं दं गत्र्यां यक्षीया
 यक्षुष्यं दयां यक्षुष्यं नाकुना गत्र्यां यक्षुष्यं कर्णं मुषुष्यं नित्रं यक्षुष्यं दितं वा. विषाकं दिग्धं लि
 फको. द. स्यां संगं द. नीय. निषंगं द. यक्षुष्यं दयां द. स्यां ख. द. दुनिर्मुंग. च नुदा सति त्रिषु
 यक्षुष्यं को द. यक्षुष्यं म. लु. ला. ग. क. व. ल. क. यक्षुष्यं द. व. स. न. ख. द. दि. म. स्या. न. ख. ल. ए. नि. व. ध.

10

5

नी. र. ल. को. ली. र. ल. र. म. स. ग. ह. म. धि. र. स्यां यक्षुष्यं द. यक्षुष्यं म. र. ल. य. नी. स्या. दी. ली. क. र. प. लि. का. रि. नि. दि.
 य. ल. क. स्या. मु. ली. य. त्रि. य. य. त्रि. य. त. न. द. य. क. र. न. य. त. र. य. स. व. धि. ति. य. य. न. य. य. ध. स्या. क. मु. य.
 सियू. गी. व. क. त्रि. का. य. सि. ध. न. का. वा. य. सि. ग. ल्यां क. नी. ग. र्व. ला. ता. म. ली. मु. यी. यो. स. मु. क. न. का. य. मु.
 मु. य. य. ल्या. य. य. का. ट. य. स. र्व. रि. सा. र. स. र्व. य. स. र्व. स. द. न. न. अ. र्थ. क. ला. हा. रि. हा. य. मु. र. ती. ग. द्वा. नी.
 ग. र्ज. ना. वि. धि. य. स. न. य. रि. ग. स. न. स. नी. त. द. रि. य. ग. नी. य. ग. य. क. रि. नि. य. र्वा. य. य. क. र्ण. न. ग. स. र्ण. ग. स. स्या.
 दी. सा. र. य. स. र. नी. य. व. र्क. व. लि. ता. र्थ. क. अ. रि. ता. ल्यां री. त. स्या. न. ल्या. न. म. रि. कु. म. वे. ता. लि. का. वा. ध. क.

五

32

॥ कृत्तियवर्ग ४॥ १२०॥ उ न वां उ न जां

五

मुखात्रिक उल्लसधू दयस्त्रिषु। यूनयूस् कथाव्ययः कदानः कुरुमस्युता केदानकी स्या केदा
यूः कुरु केदात्रिके गता। साक्षानिलखवः यूंसि काठिणा लखुन दनः याऊनै नादनै नागैः स्व
निगमयदात्रदी दणै लयिरुमात्रः। यार्गयाकुसंथा हली। निगीर्वकूठकै हलः कृषिकाला
कूलै हली। एषादात्रदी च सी नय्य गस्या म्नी यूग कीलकः। वी गं लीगल दहः स्या। स्त्री गं लीगल
पदतिशयूंसि मधिः खलं दानू धर्मयत्यबुवन्धन। आबुवीहिः याठलः स्या। स्तिन गूकयवी स
मो। लाकमुगुन हवित कलाय मुसनीनकः। हनमूखदिकी वांसि। क्षययव मुकादवः मझल्य

20

15

५१४।

गीतागमसूक्तं। श्रीवन्मनीषंशुभानां कन्दर्वास्वदनामिषा। अलिङ्ग्यं ४ स्थानमधिकं कर्कशं
 लूग्नलनिका। पि० २४ स्थास्यं खां कर्णं कलशमुत्तिष्ठया ४ घट ४ कूटनियावन्मि। गीतावाः
 वहमानक ४ मजीषं पिष्टयवर्नं कंसां मीयानराजनी। कूट ४ वृत् ४ स्तद्वयात् सेवात्या कुरुप ४
 पूमाना सर्वमायवर्नं राह्यं यातामर्गं राजनी। दधि ४ कन्धि ४ खजाकायं स्यात्तु दूधं नूहस
 क ४ अमीगं कंरुनितकं गिष्टं स्युनालिका। कठमव्यं कलमव्यं वगवात्र उयस्क ४ मति
 कितीकं ववृकश्च वृक्षाम्ममथ वल्लजं। मन्त्रिर्वकात् कंरुषू मूषदीधर्मयहनी। जीनकाज्ज

५५

10

रसजाजी कलकषु तु जीनक। सूषवीकात्रवीधुथी यथू ४ कासायकीचिका। अर्द्धं कं गृगवर्नं
 स्यादथ कृताविगुन्नकं। कमुम्बूत्रवधन्याक मथ सूष्मीमहोषधी। मीनयूसकया विग्वं नाग
 रं विग्वं शसर्जं। अलनात्रकसोवीत्र कलमाया रिसूतानिया अत्र किं सामघन्याम्बू अलानि
 चकाङ्गिकी सहस्रवधितुर्कं बाह्मीकं हिंशु गाम ० तानत्यदिकात्रवी यथी बाष्पीकाकवनी
 यथू ४ निगमकाश्चनीपीताहनिदावत्रवर्दिनी। सामूर्दयं तुलवदामं कीर्वं विग्वं वतत्
 सेधवां मीगीतगिर्वं महिमकं वसिष्ठं। गोमकं वसूकं याक्कं विग्वं वदत कद्वयी सोवर्चलं क

52

संख्या

संख्यामात्रकः (न्यायः) संख्यामात्रकः (न्यायः) १०

मानं तु लोचने ४५ ह्ये. ४५
यत्तं कर्षयतु यत्तं ॥ ५

४५

卅三

॥ कृतिवैष्णववर्णः ॥

20

15

श्री ॥

१२

॥११॥ गूदा म्म वन वधू व व व ल व उ द न य जी । आ वा तु ला तु स की धू । अ म्ब व क न म्म द य ॥ गू दा वि ल म्म
मु क न र म्म म्म व व व म्म द्वि ज न न ना ॥ गू दा कृ द्रि य या नू म्म । मा ग म्म ॥ कृ द्रि य वि ल म्म ॥ मा द्रि यो यो कृ द्रि
य या ॥ कृ द्रि यो गू द या ॥ म्म र ॥ वा कृ म्म कृ द्रि य त्म ग । ल स्य वि द द्रि का वि ग ॥ न थ का न म्म मा द्रि यो कृ
न म्म य स्य स र व ॥ स्या द्वा उ ल म्म उ नि ना । वा कृ म्म व स न य ॥ का नू ॥ गि ली स र द न । स र द या ॥ व यी स कृ ति
शि ॥ कृ लिक ॥ स्या कृ ल स ग्री ॥ मा ला का न म्म मा लिक ॥ कृ कृ का न ॥ कृ ल स ॥ स्या । त्म ग उ म्म स य क ॥ ग नु
वा य ॥ कृ वि नू ॥ स्या । मु उ वा य म्म सो वि क ॥ न कृ जी व म्मि कृ का न ॥ ग म्म मा ऊ । सि ध व क ॥ या दू द म्म कान ॥

10

5

स्या । द्वा का ना ला कृ का न क ॥ ना डी म्म म्म ॥ स र द कान ॥ का ला द्रि कृ का न क । स्या कृ वि क ॥ का म्म वि क ॥ ल म्म लि
क म्म म्म कृ क ॥ न कृ उ व द्रि कृ ल स्य । न थ का न म्म का स ग द । अ मा धी ना अ म न क ॥ को ट न कृ ना धी न क ॥ कृ वि
मृ दि द्रि वा की र्ति । ना यि ता ना व म्म यि न ॥ नि न उ क ॥ स्या द्रि क ॥ ल म्म दि कृ म्म म्म य दान क ॥ जा वा ल ॥ स्या क
जा जी वा । द वा जी व म्म द व स ॥ स्या ना या म्म म्म म्म मा यो । का न म्म पु नि हा न क ॥ ली ला लि न म्म ली लू वा । जा या जी
वा ॥ कृ म्म म्मि न ॥ रु र ना म्म यि न द । व य न म्म म्म कृ ली ल वा ॥ मा द्रि गि का मी व जि का ॥ या दि वा द म्म या दि
या ॥ व दू म्म ॥ स्या व द्रि वा । वी ध वा द म्म वे दि का ॥ जी वा न क ॥ म्म कृ नि का । द्वा वा तु लि कृ जा ति को । व

५१४॥

73

[illegible]

1871

20

15

10

5

^{अतलागानाम} ^{यहयनाम} ^{कूपयनालनम}
 चालिकापुत्रिकाया दमुदनादिरिः कृता पिठकः यठकः यजः मशुषाथविहगिका। रात्रयष्टिस्तदालम्विः नि
^{अतलागानाम} ^{लकभय} ^{ययसिरतामम} ^{मववतवा} ^{सथकम}
 क्रीकावाधयादूका। यादूयूपानस्मृ। सेवानूपदीनायदायना। नहु। वहु। वलगास्या दग्धदस्तानीकम। यधु
^{ययसिर} ^{नवाहय} ^{कमदमम} ^{सुधदिवनकमममम}
 लिकायुका। गुलवीधमयधुलवलकी। नानावास्यादधविका। ममममु निषकः कषः। युध्वनः यणयत्रधुनीविका
^{ययसिर} ^{कुडुव} ^{अतलागानाम} ^{कमदम} ^{ययनाम}
 दलिकासम। मेजसावहनीमया। रमुयमयधविका। लास्त्राठनीवधलिका। कयादीकलनीसम। विकादनीव
^{हयनाम} ^{उकयनाम} ^{मयवत्रनीमम} ^{नाममदधविक} ^{ययनाम}
 दसदीठद्वः यावाधकात्रवः। कुकवांमु। कत्रयण। स्यादावावर्मरुदिका। भूमीस्तुधमसाहयतिमा। गित्यीक
^{ययनाम}
 मीकलादिकी। युतिमानैयुतिविम्व। युतिमायुतियातना। युतिक्कायायुतिकति। नर्त्तयूस्तिपुतिनिधिः। उ

१५६

^{यय}
 यमायमानैस्याद्वाचलिगमस्तममुल्यः सदृहः सदृगः सदृक्। साधनवः समानव्यस्यत्रूनयदलमी। निरसिका
^{ययनाम} ^{ययनाम}
 गनीकाग। युगीका। गायमादयः। कर्मधायुविधरुह्या। रनया। रम्मवठनी। रनध्वरनगीमल्य। निव्वगः। यग
^{ययनाम} ^{ययनाम} ^{ययनाम} ^{ययनाम}
 वं। यो। सूत्राहतिप्रियाहला। युतिधूद्वरुधस्तजा। ग। आहमायुसनेत्रा। कादवर्गः। युतिधूना। मदिनाका
^{ययनाम} ^{ययनाम} ^{ययनाम} ^{ययनाम}
 धमयवा। योवदगमुरादृही। छुछायानमदल्लानं। मधूधवा। मधूकुमाश। मधूसवा। माधका। मधूमाधीकम
^{ययनाम} ^{ययनाम} ^{ययनाम} ^{ययनाम}
 दयाशे। मेत्रयमास्वः। सीधू। मंदकाजगलः। समो। स। अनैस्यादरिषवः। किध्वयूस्तिउनगूदृश। कात्राह्वः
^{ययनाम} ^{ययनाम} ^{ययनाम} ^{ययनाम}
 सूत्रामधु। मायानैयानल्लिकाश। वधकांमु। पानयार्। सत्रकायांनूतवदी। धाह्वदवीकिनवा। दधर्का

三

၆

(Faint handwritten text in Devanagari script, likely bleed-through from the reverse side of the page.)

۱۵

कना दीर्घसूत्र विप्र क्रियः॥ ज्ञात्वा समीक्षका नीत्या लू धुमन्धः क्रियासूयः॥ कर्मदमार्त्त कमीदः॥
क्रियावान् कर्मसूयमः॥ सकर्मः॥ कर्मणी लायः॥ कर्मसूत्रमुक्त्वा०॥ रात्र्ययुक्त्वा कर्मकः॥ कर्मका
रमुत्तः क्रियः॥ ज्ञयत्वा गम्यत्वा गमिष्यः॥ गुणसिद्धि लः॥ वृत्तिः॥ स्यात् कृधिना जिघत्सुर्वण
नायिकेनः॥ यवान्नः॥ यत्र यिष्टुदा रक्षकाद्यस्मत्पादः॥ अशूनः॥ स्यादोदविका विडिगीषा विवर्द्धितः॥
उत्तोल्लाम्त्रिः॥ कृदिम्रिः॥ स्वादययकः॥ सर्वान्नीनम् सर्वान्नाडीष्टधूमुगर्दनः॥ लूवांरिलाषुकः॥
लूक् कर्मोत्तल्लयत्तलो॥ उन्मादल्लमदिषुः॥ दविनीनः॥ समुद्धनः॥ मरुगोः॥ लूक् दहीवाः॥ काम

१७

[illegible]

11815

60

[illegible]

४९

20

5

10

15

^{मौलिक} मीचरावरी। ^{मौलिक} चलनं कस्यनं कस्यं। ^{मौलिक} चलं सारं चलाचलं। ^{मौलिक} चक्षुर्लं चयलं चैव। ^{मौलिक} यालिपुं वयत्रिपुव। ^{मौलिक} अतिरिक्तं
^{मौलिक} समधिकं। ^{मौलिक} दृष्टं धिमेसं दृष्टं। ^{मौलिक} कच्छाटं कठिनं कूर्मं। ^{मौलिक} क० भनं निखुरं दृष्टं। ^{मौलिक} उ० र्मूर्तिमं तूर्तं। ^{मौलिक} यवदं पोरुमं
^{मौलिक} धिमी। ^{मौलिक} पूराद्युतनं पलं। ^{मौलिक} पूरातनं चित्रकनां। ^{मौलिक} यथाग्रं निनवां नवां। ^{मौलिक} नवां नानूतनां नवशं। ^{मौलिक} नूतनं च सूक
^{मौलिक} मानं। ^{मौलिक} कामलं मृदुलं मृदु। ^{मौलिक} अन्वगं न्वदं मं नू। ^{मौलिक} नूयदं क्रीवमं ययी। ^{मौलिक} पुण्यदं स्यादं द्रियकं मं पुण्य
^{मौलिक} दमं गीन्द्रियं। ^{मौलिक} एकता नानं च वृत्तिं। ^{मौलिक} नकां च कायना वयि। ^{मौलिक} अयं कसं नकां च कायना वयि। ^{मौलिक} अयं कसं नकां च कायना वयि।

67

^{मौलिक} चित्रा। ^{मौलिक} यूसादि० पूर्वयोत्रस्य। ^{मौलिक} युधमांशु। ^{मौलिक} अथमिदं। ^{मौलिक} अकां उद्यनं च नमं नयं यागं ययि मं
^{मौलिक} माद्यं निनर्थकं स्यर्षं। ^{मौलिक} स्फुटं युवाकं मूलं। ^{मौलिक} साधनं रीतुं सामान्यं। ^{मौलिक} एकाकीत्वं कं एककं शिन्नार्थं
^{मौलिक} कां अत्र तत्र। ^{मौलिक} एकत्वं नयता वयि। ^{मौलिक} उद्यावर्नने कं रुदं मं उविर् विर्त्तं। ^{मौलिक} अत्र नुदं मुं मम स्य
^{मौलिक} गं वार्धं नु निनर्थकं। ^{मौलिक} पुसर्वायुतिवृत्तं स्यादं यस्वामं ययुवा। ^{मौलिक} वार्मं मत्री नं सर्वा स्य। ^{मौलिक} दं यस्व
^{मौलिक} नुदं दिदं। ^{मौलिक} सिकटं नौतुं सवाधं कलिं गहनं समं। ^{मौलिक} सिकटं सिकटं कालं मूर्तिं नय विवाधिता।

62

^{॥ १ ॥} ^{॥ २ ॥} ^{॥ ३ ॥} ^{॥ ४ ॥} ^{॥ ५ ॥} ^{॥ ६ ॥} ^{॥ ७ ॥} ^{॥ ८ ॥} ^{॥ ९ ॥} ^{॥ १० ॥} ^{॥ ११ ॥} ^{॥ १२ ॥} ^{॥ १३ ॥} ^{॥ १४ ॥} ^{॥ १५ ॥} ^{॥ १६ ॥} ^{॥ १७ ॥} ^{॥ १८ ॥} ^{॥ १९ ॥} ^{॥ २० ॥} ^{॥ २१ ॥} ^{॥ २२ ॥} ^{॥ २३ ॥} ^{॥ २४ ॥} ^{॥ २५ ॥} ^{॥ २६ ॥} ^{॥ २७ ॥} ^{॥ २८ ॥} ^{॥ २९ ॥} ^{॥ ३० ॥} ^{॥ ३१ ॥} ^{॥ ३२ ॥} ^{॥ ३३ ॥} ^{॥ ३४ ॥} ^{॥ ३५ ॥} ^{॥ ३६ ॥} ^{॥ ३७ ॥} ^{॥ ३८ ॥} ^{॥ ३९ ॥} ^{॥ ४० ॥} ^{॥ ४१ ॥} ^{॥ ४२ ॥} ^{॥ ४३ ॥} ^{॥ ४४ ॥} ^{॥ ४५ ॥} ^{॥ ४६ ॥} ^{॥ ४७ ॥} ^{॥ ४८ ॥} ^{॥ ४९ ॥} ^{॥ ५० ॥} ^{॥ ५१ ॥} ^{॥ ५२ ॥} ^{॥ ५३ ॥} ^{॥ ५४ ॥} ^{॥ ५५ ॥} ^{॥ ५६ ॥} ^{॥ ५७ ॥} ^{॥ ५८ ॥} ^{॥ ५९ ॥} ^{॥ ६० ॥} ^{॥ ६१ ॥} ^{॥ ६२ ॥} ^{॥ ६३ ॥} ^{॥ ६४ ॥} ^{॥ ६५ ॥} ^{॥ ६६ ॥} ^{॥ ६७ ॥} ^{॥ ६८ ॥} ^{॥ ६९ ॥} ^{॥ ७० ॥} ^{॥ ७१ ॥} ^{॥ ७२ ॥} ^{॥ ७३ ॥} ^{॥ ७४ ॥} ^{॥ ७५ ॥} ^{॥ ७६ ॥} ^{॥ ७७ ॥} ^{॥ ७८ ॥} ^{॥ ७९ ॥} ^{॥ ८० ॥} ^{॥ ८१ ॥} ^{॥ ८२ ॥} ^{॥ ८३ ॥} ^{॥ ८४ ॥} ^{॥ ८५ ॥} ^{॥ ८६ ॥} ^{॥ ८७ ॥} ^{॥ ८८ ॥} ^{॥ ८९ ॥} ^{॥ ९० ॥} ^{॥ ९१ ॥} ^{॥ ९२ ॥} ^{॥ ९३ ॥} ^{॥ ९४ ॥} ^{॥ ९५ ॥} ^{॥ ९६ ॥} ^{॥ ९७ ॥} ^{॥ ९८ ॥} ^{॥ ९९ ॥} ^{॥ १०० ॥}

20

15

श्री ॥

७३

^{निरुद्ध} निसा^१रुं ^{कान्त} कान्त^२ मू^३ दान्त^४ मू^५ दान्त^६ न। ^{कान्त} कान्त^७ मु^८ दयित^९ म^{१०} न८॥ ^{गमि} गमि^{११} न^{१२} या^{१३} धि^{१४} न^{१५} द्वि^{१६} त॥ ^{इय} इय^{१७} मु^{१८} द^{१९} यित^{२०} कु^{२१} न^{२२}।
^{पुनः} पुनः^{२३} दि^{२४} न^{२५} य^{२६} डि^{२७} न^{२८} वि^{२९} न^{३०}। ^{यु} यु^{३१} र्मु^{३२} द^{३३} लि^{३४} न^{३५}। ^{क्रि} क्रि^{३६} ष^{३७}८॥ ^{क्रि} क्रि^{३८} मि^{३९} न^{४०} व^{४१} सि^{४२} न^{४३} सि^{४४} त॥ ^{यु} यु^{४५} र्मु^{४६} द^{४७} यि^{४८} त॥ ^द द^{४९} ष^{५०}। ^त त^{५१} ष^{५२}।
^{वि} वि^{५३} न^{५४} न^{५५}। ^व व^{५६} धि^{५७} न^{५८} कि^{५९} दि^{६०} न^{६१} वि^{६२} द^{६३}। ^{वि} वि^{६४} न^{६५} वि^{६६} न^{६७} वि^{६८} न^{६९}। ^{नि} नि^{७०}८॥ ^{यु} यु^{७१} द^{७२} वि^{७३} ग^{७४} न^{७५}। ^{वि} वि^{७६} न^{७७}। ^{वि} वि^{७८} न^{७९}। ^{वि} वि^{८०} न^{८१}।
^द द^{८२} न^{८३}। ^{सि} सि^{८४} द^{८५} नि^{८६} वृ^{८७} न^{८८} नि^{८९} ष^{९०} न^{९१}। ^द द^{९२} वि^{९३} न^{९४} सि^{९५} न^{९६}। ^{दि} दि^{९७} न^{९८}। ^उ उ^{९९} न^{१००} स^{१०१} न^{१०२} मू^{१०३} न^{१०४}। ^{वि} वि^{१०५} त^{१०६} न^{१०७} कु^{१०८} स^{१०९} न^{११०}।
^स स^{१११} या^{११२} द^{११३} दि^{११४} न^{११५} न^{११६} म^{११७} वि^{११८} न^{११९} न^{१२०} म^{१२१} सि^{१२२} त^{१२३} म^{१२४} य^{१२५}। ^{वि} वि^{१२६} न^{१२७} म^{१२८} य^{१२९}। ^{वि} वि^{१३०} न^{१३१} म^{१३२} य^{१३३}। ^{वि} वि^{१३४} न^{१३५} म^{१३६} य^{१३७}। ^{वि} वि^{१३८} न^{१३९} म^{१४०} य^{१४१}। ^{वि} वि^{१४२} न^{१४३} म^{१४४} य^{१४५}। ^{वि} वि^{१४६} न^{१४७} म^{१४८} य^{१४९}। ^{वि} वि^{१५०} न^{१५१} म^{१५२} य^{१५३}।

10

5

^व व^१ रि^२ न^३। ^स स^४ ना^५ यि^६ त^७ मु^८ न^९ का^{१०} ध^{११}। ^{वि} वि^{१२} न^{१३} ध^{१४} या^{१५} यि^{१६} त^{१७}। ^व व^{१८} न^{१९}। ^द द^{२०} र्मा^{२१} म^{२२} र्मा^{२३}। ^द द^{२४} र्मा^{२५} म^{२६} र्मा^{२७}। ^द द^{२८} र्मा^{२९} म^{३०} र्मा^{३१}। ^द द^{३२} र्मा^{३३} म^{३४} र्मा^{३५}। ^द द^{३६} र्मा^{३७} म^{३८} र्मा^{३९}। ^द द^{४०} र्मा^{४१} म^{४२} र्मा^{४३}। ^द द^{४४} र्मा^{४५} म^{४६} र्मा^{४७}। ^द द^{४८} र्मा^{४९} म^{५०} र्मा^{५१}। ^द द^{५२} र्मा^{५३} म^{५४} र्मा^{५५}। ^द द^{५६} र्मा^{५७} म^{५८} र्मा^{५९}। ^द द^{६०} र्मा^{६१} म^{६२} र्मा^{६३}। ^द द^{६४} र्मा^{६५} म^{६६} र्मा^{६७}। ^द द^{६८} र्मा^{६९} म^{७०} र्मा^{७१}। ^द द^{७२} र्मा^{७३} म^{७४} र्मा^{७५}। ^द द^{७६} र्मा^{७७} म^{७८} र्मा^{७९}। ^द द^{८०} र्मा^{८१} म^{८२} र्मा^{८३}। ^द द^{८४} र्मा^{८५} म^{८६} र्मा^{८७}। ^द द^{८८} र्मा^{८९} म^{९०} र्मा^{९१}। ^द द^{९२} र्मा^{९३} म^{९४} र्मा^{९५}। ^द द^{९६} र्मा^{९७} म^{९८} र्मा^{९९}। ^द द^{१००} र्मा^{१०१} म^{१०२} र्मा^{१०३}। ^द द^{१०४} र्मा^{१०५} म^{१०६} र्मा^{१०७}। ^द द^{१०८} र्मा^{१०९} म^{११०} र्मा^{१११}। ^द द^{११२} र्मा^{११३} म^{११४} र्मा^{११५}। ^द द^{११६} र्मा^{११७} म^{११८} र्मा^{११९}। ^द द^{१२०} र्मा^{१२१} म^{१२२} र्मा^{१२३}। ^द द^{१२४} र्मा^{१२५} म^{१२६} र्मा^{१२७}। ^द द^{१२८} र्मा^{१२९} म^{१३०} र्मा^{१३१}। ^द द^{१३२} र्मा^{१३३} म^{१३४} र्मा^{१३५}। ^द द^{१३६} र्मा^{१३७} म^{१३८} र्मा^{१३९}। ^द द^{१४०} र्मा^{१४१} म^{१४२} र्मा^{१४३}। ^द द^{१४४} र्मा^{१४५} म^{१४६} र्मा^{१४७}। ^द द^{१४८} र्मा^{१४९} म^{१५०} र्मा^{१५१}।

56

၆

20

15

श्रीः

७७

^{नृद} ^{तपस्यया} ^{सखा} ^{दानद}
 दानावनी यथा फिः स्यात्पनिगर्हं हस्तानामिहयि सवनं सावनं स्यात् द्विद्वं स्फुटनं रिदा आका
^{मगवाव} ^{धया} ^{ययू} ^{यिसा} ^{द्वद्वम}
 गनमसिखीगः सवदावदनानना समर्कनमं रिवाफि यां कु रि दार्थनादना वद्वनं कदनं थ
^{नृद} ^{उपदगागुययय} ^{सगव} ^{दान} ^{वद्वम}
 द आनन्दन सराजन आयु कनमं थमायः सयदायः कय कया ग्रहग्रहाभावः कानो वद्व
^{मथरा} ^{सदस्यनक} ^{वद्वम} ^{यक्या} ^{वन} ^{द्वद्वम} ^{दाहय} ^{नदि} ^क
 मुहोत्रदाः कदा यथावधयथापाक रुवा कृते वत्रा वतो डावः प्रवाचनया नाय आनिही व्माय
^ह ^{दावय} ^{गानि} ^{यिसा} ^{यय} ^{आवक} ^{रुसतय} ^{यथासुति}
 मयमो स्फुटि वद्वो यथा खातो स्य चिः पको मुवः मुव विधसमृद्धी स्फुटनी स्फुटनीयुमितीय
^{दव}

10

5

^{पुनरावयय} ^{नमोय} ^{उयय} ^{सख} ^{यमसना} ^{यय}
 मायुसुतिः पसवः आग यथात्रः कुमथः कुम उत्कर्षाति गायसन्धिः ग्रह विषयग्रययः कि
^{यय} ^{यय} ^{यय} ^{यय} ^{यय} ^{यय} ^{यय} ^{यय}
 पाया कयदी गीर्ण गिर्णो गुत्रामूयम उत्राय उत्रय आयः ग्रयलीजयन ऊयः निगदा निग
^{अहक} ^{उमवकाय} ^{द्विसादिसगय} ^{द्विसादनमक} ^{ययामद}
 दमादा मद उद्वग उद्वमो विमद्वर्नय त्रिमसा लूयय लित्र नू गुरु निग्ररु सु द्विद्वः स्यादं
^{यय} ^{यय} ^{यय} ^{यय} ^{यय} ^{यय} ^{यय} ^{यय}
 रिया गस्तु रिग्रदः मुखिव भमु सगदा त्रिभुजमन विपुवो वन्धनयुसितिः अत्रः स्यर्गः
^{यय} ^{यय} ^{यय} ^{यय} ^{यय} ^{यय} ^{यय} ^{यय}
 सुखाय गफ वि निकात्रा विपुकात्रः स्या दकात्रा हिं कृती यत्रिषमा विकात्रा दः सम वि
^{द्वयासनय}

20

15

10

5

सू २

मूल्याय

वज्रसूत्र

कास्य

कृतिविक्रियः। अयदात्रह्यययः समादानः समुद्रयः। यथाहप उपादानं विकोदात्रमुपवि
 कमः अतिहानां शिग्रहं निहोत्रविकर्षणं। अनूहानां नूकानः स्यादर्थस्यायगमययः। यवोदमु
 युवलिः स्यात्सुवदागमनेव हिः। वियामावियमायाभायमः संयामसंयमो। हिंसाकर्मो शिवात्रः
 स्यात्। गम्याजगमाद्ययाः विद्यानकायः पयूरुः। स्यादयद्यानिकोययः। निर्वगडयरागः स्यात्स
 त्रिस्यः यत्रिक्रिया। विधूरं गुयविंस्वाशियायं नूदअभयः। संदयं ससमनं ययोवस्वावि
 ५४५ नवीय

५६

वज्रसूत्र

शोधनं। यत्रिस्योयनीसात्रः। स्यादोस्यात्सोसनीस्तिनिः। त्रिस्राविग्रहावासः संवगकस्यवि
 स्रः। स्यान्मर्दनं सवाहनं। विनागः स्यादंननं। संस्रवः स्यात्स्रित्रयः। यस्त्रमुविसर्प्यं।
 नीवाकमुययामः स्यात्संनिधिः संनिकर्षणं। स्वांशिसावातवर्नः निष्ठांयः यवत्रययः। य
 स्रावः स्यादंनस्रमुस्रः स्रवः स्रनं। यजनः स्यादूयस्रः। यस्त्रः यद्योसमो। धीगकिः
 त्रिषुमांमु। उंसीकमादूग्नं स्रवः। ययूकमः यथागर्थः। यकमः स्यादूयकमः। स्यादंनदा

मिथ्या तु निश्चयः। निश्चयिनिश्चयन निश्चयन मिथ्या निश्चयानि। जवनं हूतिस्मानिः खं वसानं स्याद
धं ह्वयामूरिः। उदकं मुयं मुयं दमं कर निश्चयः ४ भयं। भयं न कस्य सस्यं वन्दं मिथ्योप
गवकादिकीं। आयुषिकं भयं सुलिकं भयं मायं भयं तसीं। मानवानां पुमादयः सहायानां सहायता।
हस्याहसानां वाक्कायवाक्यं दुद्विजनी। दयार्थं कानीयं चानीं। याश्च यश्च मनूकमाता खलानी
खलिनी खल्याः। यथमानुषाकं नृणां। अमतां जनतां धृम्याः। याश्च गल्यायथक्यथका। अचिसाह

[illegible][illegible]

20

15

62

^{वाककडकाकापुठभूतसखनपुनका} ^{उल} ^{मितिप्रियतदिकल} ^{समयनकादिनि}
 लाकमुकधन्यसंरुपरकसिकुका। उलककविदायूक मूसायानयययकशी कमधुसोचक
^{नथागमगधमयाः} ^{वृत्तुनासुका नसडाकयू} ^{मथनववविकुडास} ^{मिमत}
 यकः सुगतयविनायकशी किष्कूहसुवितसोस भूककीठभ्ववभिकशी पुनिकूलपुतीकः
^{कुसुतिथय} ^{सादा} ^{नामकपोवसास} ^{चउकडिपुनवास} ^{मिपुकासुकावानकी}
 शककहाउपूसायी साहूतिकुंरुनिभ कलरुहृरुहृरुचिच। शीतिकायाचदायचकाशी
^{दिगदस} ^{सिगखदिनविडासममवल्काय} ^{म। सुडाहमतासुपियका} ^{मील} ^{दिद}
 तकाथकदुल। सितयखदियसाम वल्कः स्यादथसिद्रक। मितकल वयिष्काका वाहीकनाम
^{उउ} ^{गुडस} ^{उलि} ^{एयडादधनसुको। गक} ^{ममदरु। न। म।} ^{ममदरु}
 रोचिय। मरुदुगुनुतुलक वालग्रहयूकीमिकशी त्रकायग कासातकः खल्ययिद्रलक
^{विम्यामिनुमा। म। क। क। य।}

10

5

^{नवदीर्घपुधिव} ^{उउम} ^{नवपुनका। विमपुन। व।} ^{मम} ^{ममपुन} ^{ममपुन}
 निष्ठाजीवाककेः गभाकयि खनयाभस्य वल्कशी वाधुयियुलुतीका नायवानामयिदीपक
^{ममपुन} ^{ममपुन} ^{ममपुन} ^{ममपुन} ^{ममपुन} ^{ममपुन}
 शीमलावकाः कयिक्राकू भनः खल्लियेगेरिक। यीजार्थयिगलीकस्यादलीकलियनन।
^{ममपुन} ^{ममपुन} ^{ममपुन} ^{ममपुन} ^{ममपुन} ^{ममपुन}
 मीलानयवनेकद गल्लसकलवल्कल। साखगतसुवल्कनी दम्पुपारुषलयव। दीनावयि
^{ममपुन} ^{ममपुन} ^{ममपुन} ^{ममपुन} ^{ममपुन} ^{ममपुन}
 वनिष्कामी वल्कामी समलेनसाशी दम्पुयथयिनाकामी गूलगद्वनधननाः धनूकावकयल्क
^{ममपुन} ^{ममपुन} ^{ममपुन} ^{ममपुन} ^{ममपुन} ^{ममपुन}
 मयजालवकालिका। कात्रिकायातनायंहाः कर्दिकाकल्लखवदी। कविहसुसुलोयद्वी
^{ममपुन} ^{ममपुन} ^{ममपुन} ^{ममपुन} ^{ममपुन} ^{ममपुन}
 का

जकाया निषूतः । वन्द्यको नूचिस्त्वयो, वैकमूखा न्यकवला । स्यादांशिक को कूटिका यम्यदूर
त्रिगुणः । लालाटिकः युगाकूल, दर्शकाया दमभ्ययः । मयस्वस्त्रिद्वन्द्वाला, खलितालोमि
लीमुखी । शिखानिधिलालाटि, कम्बो नमूचियं चिखी । घटिका लज्जुचिगिरि, लोलकको नम
वलो । श्रुणु लोवायुचिगिरि, शत्रुर्क विरुगः खगः । यमोक्षोपदिह्योयः, यूगः कुमकवन्द
याः । यमवाचिस्त्वमवगः, युवाकूजवयाचि । यमोक्षः कोसुमवलो, लानीयादोत्रउस्यचि । गज

पिनागमात् (को. जूपादसि स कथितं) सन्नेऽसदावर्तनी मादः निव्यया धाय सुषिषू। यागऽसन्नह
नापायः ध्यानसंगतिमूकियू। रागऽसूखं स्त्राजिह्वायवहं व्यरुहाकाययाऽ। यात कंदत्रिदं पं सि.
भर्त्रेणऽगवले लिषू। कथोचयुवगऽभयं लंशियुगऽपत्राखं। यानाश्रं गयुगऽयसि. युगंय
भंसकमादिषू। स्य (वर्णेषूपरुवाग्वडं) दिद्वयं छिहडस। लक्ष्मिदृष्टामियीपं सि. (मे) लिगं विद्रा
रुयाऽ। गं गं पाधन्यं सान्नाय्यं वरीगं मूहं गुह्ययाऽ। रंगं ग्रीकाम माहर्त्यं वीर्यं यत्ना कं कीलिषू।

५१४॥

२१

12

20

15

श्री १॥

२४

^{सर्वत्र} ^{यत्र} ^{सर्वत्र} ^{यत्र} ^{सर्वत्र} ^{यत्र} ^{सर्वत्र} ^{यत्र}
 मखनं ॥ मन्त्रा ॥ दवस्थो विवस्वतो सत्रस्वको नदार्ध्वो । यद्विनाशो गत्रस्वको गकूको रास
^{यद्विनाशो} ^{यद्विनाशो} ^{यद्विनाशो} ^{यद्विनाशो} ^{यद्विनाशो} ^{यद्विनाशो} ^{यद्विनाशो} ^{यद्विनाशो}
 यद्विनाशो । अग्न्याग्नौ धर्मकं द्वाजीस्रतो मद्ययवृत्तौ । रुक्तागुयादिनद्वं मन्त्रो यवनामन्त्रो । य
^{नाद्विनाशो} ^{नाद्विनाशो} ^{नाद्विनाशो} ^{नाद्विनाशो} ^{नाद्विनाशो} ^{नाद्विनाशो} ^{नाद्विनाशो} ^{नाद्विनाशो}
 नाद्विनाशो कस्रुगं रक्तभित्तिधावृत्ति । यानयानं मिषोपातः पुनः पुनश्च नमन्त्रः । गुरु
^{रुक्तागुयादिनद्वं} ^{रुक्तागुयादिनद्वं} ^{रुक्तागुयादिनद्वं} ^{रुक्तागुयादिनद्वं} ^{रुक्तागुयादिनद्वं} ^{रुक्तागुयादिनद्वं} ^{रुक्तागुयादिनद्वं} ^{रुक्तागुयादिनद्वं}
 रुक्तागुयादिनद्वं पार्थिवं नयसूतः । स्तूपनिः कानुरादयः हरे हू मिधनय । मूर्द्धा शिखिका
^{स्तूपनिः} ^{स्तूपनिः} ^{स्तूपनिः} ^{स्तूपनिः} ^{स्तूपनिः} ^{स्तूपनिः} ^{स्तूपनिः} ^{स्तूपनिः}
 स्तूपनिः मृगुमीकृष्टमपिच । विष्ठावयां जितायाको रक्तस्वस्त्रिसानथो । यकः पाङ्क विद्वेषा

10

संम ३

^{सर्वत्र} ^{यत्र} ^{सर्वत्र} ^{यत्र} ^{सर्वत्र} ^{यत्र} ^{सर्वत्र} ^{यत्र}
 नावृत्तं मन्त्रनिदर्शन । कलास्यात्सानथो द्वाः स्तूपे वैष्णव्यामपि मृदुङ् । वृत्तानः स्तूपक
^{यद्विनाशो} ^{यद्विनाशो} ^{यद्विनाशो} ^{यद्विनाशो} ^{यद्विनाशो} ^{यद्विनाशो} ^{यद्विनाशो} ^{यद्विनाशो}
 यद्विनाशो कात्वा वार्त्तयाः । आनर्हः समनयः स्तूपननीव द्विषावयाः कृता नायमसिद्धा
^{नाद्विनाशो} ^{नाद्विनाशो} ^{नाद्विनाशो} ^{नाद्विनाशो} ^{नाद्विनाशो} ^{नाद्विनाशो} ^{नाद्विनाशो} ^{नाद्विनाशो}
 नाद्विनाशो कर्मासू । अष्टादित्रसंनकादि महास्तूपानितकुक्षः रुद्रियाभ्यं विद्वति
^{स्तूपनिः} ^{स्तूपनिः} ^{स्तूपनिः} ^{स्तूपनिः} ^{स्तूपनिः} ^{स्तूपनिः} ^{स्तूपनिः} ^{स्तूपनिः}
 स्तूपनिः निष्पन्नवर्षः कदा नयं पिष्टुद्धा ना नयस्यासर्वभयन । कास्तूपमर्थयाः ८
^{यद्विनाशो} ^{यद्विनाशो} ^{यद्विनाशो} ^{यद्विनाशो} ^{यद्विनाशो} ^{यद्विनाशो} ^{यद्विनाशो} ^{यद्विनाशो}
 यद्विनाशो काथिन्यकाययाः विस्तारवत्यावृत्ति । वृत्तं नीमनिवर्षमनाः कृतावृत्तानय

0

centimeters 5 10 15 2.0 2.5

20

15

10

5

संस्कृतभाषायां महत्त्वम् ॥ ३२

चितिः सतिर्दोनां वसानयाः। अर्तिः पीजधनूः काद्याः। अतिः सामान्यं जन्मनाः। युवायस्य न
 यांतीति। त्रीतिः शुभं युवा सयाः। उदयं विगमयौकिः। गुतां लब्धिगययू। वीक्ष्य रक्षयि महती
 हतिः समनिसंयदि। नदी नगर्यान्नागसर्पः। रागे वयं थर्गय। सः ससायां समितिः। क्य
 वासावयिद्वितिः। नवत्रयिभ्यः मन्त्रः। वक्रिक्तासां च हनेयः। उगती उगतिः कन्दः। विगययि
 दितावयि। यं किं च्छुन्दा चिदगमं स्यात्। सुगावयिवायनिः। पतिर्गन्तो यमस्तु। यद्वतिः यद्व

श्रीध

लज

संस्कृतभाषायां महत्त्वम् ॥ ३२

रदयाः। युक्तित्थानि लिङ्गयि। केमिकां शान्त्यस्तुल्यः। सिक्ताः स्युर्वास्तुकायि। वदध्रवसिच
 धूतिः। वनितां जनितायना। नृनामयां चयायिनि। शुकिः। द्वितियूदासयि। धृतिः। ध्रुवधीर्य
 याः। वदती। दूदवाहकी। च्छुन्दा रदमरुहयि। वासिनां म्नी कनिष्ठाभ्यः। वाह्ये लो जनं धृती
 । वाह्ये। शुद्ध्या गन्तुं। निषेयं च घनामन्त। कलौषीतं वृथा दम्नाः। निमित्तं हनु लक्ष्मः। धृ
 र्गमन्त्रावधतया। यूगयय्या फयाः। केतः। अखादिर्गमहारीतिः। कर्मजीवानयद्विय। यूकः। क्का

संस्कृतभाषायां महत्त्वम् ॥ ३२

20

15

ग्री ४॥

२१

अरुंजीमगवत्सरो । अरुवोदोनुनिर्दोदु दायोदोसुतवाधयो । योकात्रग्माधिउर्योदु ४ वजोग्मा
 कोसुमानुदशी निर्दोदोजनवाधयि । अादोउम्वसंगवाया ४ सारावत्रुदितंगान योकुन्दादात्रु
 तदो । स्यात्युसादोनुत्राधयि । सुद ४ स्याद्युअनयिव । अमवाधुधयि अमविदा हवयोमादवन्म
 दशीपोधन्यत्राजलिअव वसाअककूदोमिया । सुसम्वित्दोनसमावा । क्रियाकात्राजिनामसु
 धमत्ररुस्यपनिव । स्यादोवत्सत्रात्रत् । पदयवसितिगाद । सुनसम्माधिउरमुषू । अमवदोस
 कनककदोदो

10

5

वितमान युतिषोदुयमास्योद । विधिषुमधुत्रोसोदु मयुवातादुका मसो । मूदोसोयदुनिकोग्मा
 मन्दो ४ सुदोनुअत्रो । पुण्यग्रयुतिरोविद । सुयुगसोविअत्रो ॥ दान ॥ यामोवठव्वन्याअम
 वूत्सोकोकायउन्नति ४ यय्यहात्रग्माग्माग्मा वीवलोविरोसेसो । यत्रिधियादियगत्रा ४ अमवा
 यामुपस्योके ४ वधक यसनवत ४ यीजोधिखानमोधय ४ समोधिउकातीवाक नियमर्थस
 मर्थन । दोवात्यादनुवध ४ स्या । सुदुवादिषूनग्मात्र । मूखानुयायिनिमिअो । पुदुगस्यानिवर्क

20

15

श्री ४॥

२६

^{यस्य का प्रतिक्रिया}
 न। विधुर्विधो यन्मसि पत्रिकुद विसुवधिश विधिविधं नद व पि युनिधिः पार्थन वन। वद्वेदोप
^{विधुर्विधो यन्मसि} ^{यस्य का प्रतिक्रिया}
 धितयि स्के-भः समूहययि व। द। ग। नद वि। ग। य। यो। सिधुन्ना सत्रिति क्रिया। विधुर्विधो यका न व सा
^{विधुर्विधो यन्मसि} ^{यस्य का प्रतिक्रिया}
 ध्रुवमं यिवगिषू। वधुर्विधो यान्मसि व। सुधुर्विधो यान्मसि व। सन्धुर्विधो यान्मसि व। यद्विधो यान्मसि व।
^{विधुर्विधो यन्मसि} ^{यस्य का प्रतिक्रिया}
 एहा। मेधुर्विधो यान्मसि व। यद्विधो यान्मसि व। यद्विधो यान्मसि व। यद्विधो यान्मसि व।
^{विधुर्विधो यन्मसि} ^{यस्य का प्रतिक्रिया}
 वधुर्विधो यान्मसि व। यद्विधो यान्मसि व। यद्विधो यान्मसि व। यद्विधो यान्मसि व।

10

5

श्री ४॥

२७

^{यस्य का प्रतिक्रिया}
 श्रीविश्वराजं रात्रिं नमिदिवा करो। रुगात्मानो धारय वी। मधुर्विधो यान्मसि व। यद्विधो यान्मसि व।
^{यस्य का प्रतिक्रिया}
 लो। यद्विधो यान्मसि व। यद्विधो यान्मसि व। यद्विधो यान्मसि व। यद्विधो यान्मसि व।
^{यस्य का प्रतिक्रिया}
 यद्विधो यान्मसि व। यद्विधो यान्मसि व। यद्विधो यान्मसि व। यद्विधो यान्मसि व।
^{यस्य का प्रतिक्रिया}
 रात्रिं नमिदिवा करो। रुगात्मानो धारय वी। मधुर्विधो यान्मसि व। यद्विधो यान्मसि व।
^{यस्य का प्रतिक्रिया}
 लो। यद्विधो यान्मसि व। यद्विधो यान्मसि व। यद्विधो यान्मसि व। यद्विधो यान्मसि व।

दर्थ

नाशं शूरिमानां धर्मिण्डुर्वा. इत्यनयुधयहिं स्यात् ॥ घनां भद्रं मरुत्तुष्टा. शिषुमरुत्तुनिवन्तः ॥ न ॥ सूर्य
पुरां राजा. मन्मत्तं दृष्टुं शिषुमरुत्तु. वाहिनीं नरुकी मरुत्तु. सुर्व्यामपि वाहिनी. कादिभ्यो वङ्गत्तुति
वन्मयामपि कामिनी. त्वग्दह्याय चित्तनु. सुनाधजिह्वा का पिच. कुतु विस्तारया वन्म. तितान
शिषुमरुत्तुका मन्मत्तं कर्तुं नरुत्तु. कर्ता वृत्तिमन्तु. वदसुत्तुतया वृत्त. वृत्त. वियः युजायति
॥ उत्साहनयहिं सादो. सुवनं वा पिगन्धनं. शूरिन् यन् यतीयाय. उत्वरायाय नार्थक. शूरिन् ला

२२

नरुत्तु. निश्चिनावयवव्यपि. स्यात्कोलिर्नराकवाक. यद्वयम्बहियदिर्मा. स्यादृशार्ने नि ॥ गत्र
वन्मरुत्तुयुजायति. शूरिका. गच्छितुं सुन. कीजदावपि दवन्. उत्तर्ने यो नृषं नरुत्तु. सन्निवि
शूरुमपिच. वृत्तार्नेयुतिनाध्व. विनाध्वनरुत्तुयिच. मारुत्तुमरुत्तुसंस्कार. गच्छितुं यार्थदाय
न. निवर्तुनायक. नरुत्तुसुत्तुसाधन. निश्चिर्नरुत्तुशुद्ध. दानं न्यासार्थं यिच. यस्
नरुत्तुयिच. गच्छितुं कामजुकायज. यद्व्यादिसाम्नि किञ्च. नरुत्तुयार्थं यिच. निधिर्

दी१

٩٥٥

साकः वायालिङ्गासंस्थान्तराः । समानाः सत्समेकस्यः । चिञ्चनोरवत्सूत्रको । दीर्घान्नावृत्तगच्छो
वगिसूत्रोत्तरसिन्धो । अस्त्रियन्नायनाक्षरि । अस्त्रियायकतावयि ॥ नाक ॥ कलायास्त्रयः दीर्घः । त
दीर्घसंज्ञकयिन् । यत्रिकुट्टयनीवायः । ययूकोसलितस्त्रिन् । अथूक् । अथयति । अन्धो । दृष्टा
विष्णुर्वाक्यी । वायावृष्णांशुः । सिधुत्वनमांशुदन्तद्वयः । तस्यैवाद्यादृष्टान्वयः । सुस्रियविनयासि
याः । याफयूयः । सूत्र्याशि । त्र्यायूधमनाइयाः । श्रुलिङ्गाश्रमीकूमी । वीधसद्वयकक्षयी ॥

20

15

श्री ४॥

१०१

पाक॥ त्रिवर्णकृत्स्नितरेखा. द्विपदावर्धनं चित्रं। गिर्यमलतनूधर्मा स्या. ऊवादीनीखूरचित्रं। गुम्फः
 स्यादुक्तनक्षत्रं. लंकारगदनचित्रं। गिर्यज्जटायामिति. मसिकायाश्च मानूत॥ राक॥ मूक
 नारायणसखीगण. गभर्वादिग्रन्थयन। कमूर्त्तायलयगर्भ. द्विजकोसर्पसूचको। यक्षचालिः
 मः॥ युगमहं पूवर्गसंघिष्वजान्॥ वाक॥ वृक्षोद्यतं रम्यद्विजो. उन्मोचमिषुवालिलम्। स
 म्भोक्तुमज्जरावो. गम्भूयकगिलायनो। कृद्विभूतकृकागर्का. विमम्भयुधयचित्रं। स्यादुर्ग्या

10

5

दून्दुरिष्टयसि. बद्धदून्दुरिष्टमिथ्या। स्यान्महाजनकीर्त्त. वृक्षमूर्त्तकत्रकयमान्। कृत्तियचित्र
 नारिन्ना. सूरारिग्नविचमिथ्या। संरासंसदिसंघेषू. निषधकचित्रसूरारः॥ राक॥ किरण
 ४युगदोयगमी. कचिरुकेयवकुम्भो। नृकासनारवाकोमो. सोय्याधालोयत्राकुम्भो। धर्मोऽयुध
 यमन्याय. सूरारवाचारसामयाः॥ उपाययवृज्जानम्. उपधाययुक्मशीवदिकथः॥ यूरव
 दा. निगमानागत्रावदिक। निगमाद्योवसत्रामा. नीसयानूस्तिनसंचि। मकादियवृद्विचयिग

20

5

शी ४॥

मः काकोव कुं विमः गुत्ता यूतम्वसनाय. जामिः स्वसूतक्रियाः क्रिति श्रीत्याः कमायूकः
 कर्मगकहित शिवू। शिवू म्मोहविल्लुषो. म्मामाह्यात्मा विवानिगा। सलामयूकयुजाय. रूवा
 प्राधनयकठुष। मूक्षमम्मा समयाय. यधनयथमं शिवू। वामो वल्लुयगीयो दो. जूधमो नूनक
 सितो। जीर्णयत्रिकुर्कय. यातयाममिमं दय॥ मान॥ तुन जंगवूजीनाक्षो. निरयायययोदयो
 म्पशुयोदवत्रम्मासो. शालयो शालजद्वियो। ययो नोनसदकुं दो. स्यादयोः सानिरे म्मयाः शिति

१०२

10

5

षाः पूषकलियू. ययोयो वसत्रकुमा। यययोधीनगयथ. ज्ञानविग्मां सुरुषू। त्रधुगकथान
 मया. दीर्घद्विषानूताययाः। रूसात्रयत्तसाकल्य. नागनीमधूमगत। समयाः मयथा बाल. काल
 सिद्धान्तसन्धिः। वासनानां गुहं देवं. विपदित्यनयो मुयः। जूयथा तिकुमककुं दाषक. दुय
 थयदि। यूदययाः सस्यत्रायः. यक्षमुष्यशुत्रचिवा। यम्मादव रूयिवलं. समवायम्बसन्नयो
 । संधातसन्निवर्णय. सल्लायः पुनयाहमी। विमुह्य अथुमा. विकारायि समुद्रयः। विषया

म२

यस्ययाज्ञानं सुगुणकदिकव्यपि। निर्यासयिकवायासी। सहायाभ्युत्तिसुयशं प्रायारुम्भानगमनमन्यु
 देनकुनोक्वधि। तदस्यायस्यार्थं सहाययथगतथायाः। वीर्यवलयरावीच। देवीरवागुद्यप्रय।
 धिष्णुं स्तनगृहसंज्ञो राग्यकर्मगुणगुण। कलत्ररुम्भाग्यं विगत्यादनिकायित्र। वृषाकंयी
 ग्रीष्मेया। त्रिशिखानामग्निरयाः। ज्ञानशानिःकृतिःमिहा। यजुर्नसंयुधनर्ग। उपायःकर्मवः
 सायं विकिसांयनवक्रियाः। क्रायासूर्ययियाकानिः। युतिविम्वमनागयः। कक्षापुकाष्टरुम्भोद

श्री ४॥

१०३

काकुसुमस्यैवधन। कस्याक्रियाकवतया। मुष्णराशधनादिरिः। उन्मःस्यडूनवादेयि। उद्यन्नाशोध
 मयित्र। गच्छाधीनोववकव्यो। कस्यासङ्गनिगमयो। अर्थवाननयनीधर्म। दक्षयुधनुवाव्यि। नृपायु
 गस्तृयायि। वदनावावसुवागंयि। नाययिमक्षःसोम्यनु। सूनवसोम्यदेवर्ग। निवदावसत्रोवागो।
 ससत्रोयसुवाधरो। गुनूगीयनिचिगाडो। दायवैष्णुसंगयो। पुकोत्रोहंदसादृष्य। अकोनाविद्विता
 कता। किंभनूकंनगूकषू। मधूधनधनाधरो। जूडयाक्रमलोत्तकः। मीसुनोदोययाधरो। धनो

याक ३

३९

20

15

10

5

जान

परिवारिक

योगास्थाः शायद्विगतौ। नूरां हवाम्भूरां यूसूसा। रुन्दी निदोयमीलयाः। धेरीसा दूयमातीयि। द्वितिर्यौम
 लक्कयि। इडावृक्षानदीवध्मा। गत्रघाकठकारिका। गिबूकूरोधमस्ययि। इडां मागोयत्रिकुदा। गूय
 ययत्रिमादसा। मार्गकास्तीवध्मात्रा। आलखाभ्यर्थाग्येरी। कलेरी। अदिगार्थायाः। याग्यराजन
 याः पोर्गु। योग्यवाहनयदयाः। निद्वगंयक्याः। भेर्गु। आयुधलाहयाः। स्याङ्गु। युक्त्या। नैर्गु। योग्यपत्नी
 गत्रीययाः। मखा। अकठहलयाः। योग्य। भेर्गु। तुनामिया। सगुमी। कठनयङ्गु। सदादानवर्नयिवा। अ

गोर्गु २

१०५

जिरेविषयकायः। योग्यैर्वाग्निवाससि। चर्कगर्ह्ययादेरी। मादवृक्षीनमयूया। खर्गुयिरुत्रिवन्
 दौ। दागमागुयि। भेर्गु। गुहाकमोगदेरद्वन्। नदीनिकीउपद्वन्। यूनाधिकमयय्यगु। अगत्रन
 गत्रयूरी। मन्त्रिरीवाध्माक्षुमी। विषयस्यादूयद्वन्। देनामिया। मयय्यगु। वेजांकीदीनकयवो। गन्
 युक्षनसिद्धान्त। सगुवाययत्रिकुदा। डिगी। यध्मासत्रद्वन्। योग्यीर्गयनासन। यूक्तेर्यकविहसा
 अ। पाग्रगुमूखजल। वाग्निखदुखलपद्म। तीर्थेयधिवि। गवयाः। अनेत्रमवका। भवधिवि

20

15

५१॥

^{सुखं कलसं} वि। ^{मदं} अद्वां ^{मदं} मू ^{मदं} विदुतां ^{मदं} वेलां ^{मदं} कालमय्यो ^{मदं} दयाय वि। ^{मदं} वदूतां ^{मदं} कलिकां ^{मदं} भवां ^{मदं} वदूतां ^{मदं} निः ^{मदं} सितां ^{मदं} विषां ^{मदं} सी
^{मदं} तां ^{मदं} वितां ^{मदं} सं ^{मदं} वि ^{मदं} उया ^{मदं} नू ^{मदं} ये ^{मदं} तां ^{मदं} ग ^{मदं} क ^{मदं} ना ^{मदं} व ^{मदं} वि। ^{मदं} गी ^{मदं} त ^{मदं} म ^{मदं} सि ^{मदं} की ^{मदं} ता ^{मदं} ल ^{मदं} मू ^{मदं} त ^{मदं} मा ^{मदं} य ^{मदं} नि ^{मदं} ख ^{मदं} र्थ ^{मदं} या ^{मदं} ॥ ^{मदं} जो ^{मदं} र ^{मदं} स
^{मदं} म ^{मदं} र ^{मदं} अ ^{मदं} ना ^{मदं} यां ^{मदं} ग ^{मदं} वा ^{मदं} क ^{मदं} ना ^{मदं} र ^{मदं} का ^{मदं} व ^{मदं} वि। ^{मदं} गी ^{मदं} र ^{मदं} स ^{मदं} रा ^{मदं} व ^{मदं} स ^{मदं} द ^{मदं} र ^{मदं} स ^{मदं} स ^{मदं} र ^{मदं} उ ^{मदं} क ^{मदं} र ^{मदं} र ^{मदं} ल ^{मदं} क ^{मदं} दि ^{मदं} न ^{मदं} र ^{मदं} ग ^{मदं} न ^{मदं} उ ^{मदं} ॥ ^{मदं} की ^{मदं} र ^{मदं} व
^{मदं} स ^{मदं} म ^{मदं} र ^{मदं} प ^{मदं} ठ ^{मदं} र ^{मदं} न ^{मदं} ना ^{मदं} । ^{मदं} अ ^{मदं} ध ^{मदं} ॥ ^{मदं} स ^{मदं} नू ^{मदं} य ^{मदं} था ^{मदं} न ^{मदं} म्नी ^{मदं} ग ^{मदं} र ^{मदं} स ^{मदं} या ^{मदं} य ^{मदं} मि ^{मदं} व ^{मदं} य ^{मदं} र ^{मदं} ल ^{मदं} डी ^{मदं} व ^{मदं} न ^{मदं} स ^{मदं} य ^{मदं} पा ^{मदं} ता ^{मदं} र ^{मदं} य ^{मदं} र ^{मदं} य ^{मदं} म ^{मदं} ध ^{मदं} म
^{मदं} विषां ^{मदं} दू ^{मदं} क ^{मदं} र ^{मदं} ग ^{मदं} क ^{मदं} रि ^{मदं} ॥ ^{मदं} की ^{मदं} र ^{मदं} व ^{मदं} य ^{मदं} ना ^{मदं} उ ^{मदं} र ^{मदं} ख ^{मदं} ना ^{मदं} न ^{मदं} । ^{मदं} नि ^{मदं} नि ^{मदं} न ^{मदं} क ^{मदं} व ^{मदं} स ^{मदं} मि ^{मदं} ति ^{मदं} मि ^{मदं} लि ^{मदं} र ^{मदं} ग ^{मदं} स ^{मदं} क ^{मदं} क ^{मदं} स ^{मदं} या ^{मदं} ॥ ^{मदं} य

१०१

10

5

^{मदं} य ^{मदं} कि ^{मदं} क ^{मदं} म ^{मदं} य ^{मदं} (^{मदं} ध ^{मदं} व ^{मदं}) ^{मदं} कू ^{मदं} ग ^{मदं} र ^{मदं} मि ^{मदं} दि ^{मदं} त ^{मदं} विषां ^{मदं} य ^{मदं} वा ^{मदं} ल ^{मदं} म ^{मदं} व ^{मदं} र ^{मदं} या ^{मदं} म्नी ^{मदं} विषां ^{मदं} र ^{मदं} ल ^{मदं} ज ^{मदं} स ^{मदं} य ^{मदं} य ^{मदं} । ^{मदं} क ^{मदं} र ^{मदं} तां ^{मदं} क ^{मदं} न ^{मदं} उ ^{मदं} र ^{मदं} क
^{मदं} वा ^{मदं} त ^{मदं} र ^{मदं} क ^{मदं} व ^{मदं} य ^{मदं} ग ^{मदं} ल ^{मदं} ॥ ^{मदं} म ^{मदं} र ^{मदं} क ^{मदं} क ^{मदं} य ^{मदं} वा ^{मदं} ल ^{मदं} ॥ ^{मदं} स ^{मदं} य ^{मदं} स ^{मदं} स ^{मदं} क ^{मदं} य ^{मदं} या ^{मदं} ॥ ^{मदं} सा ^{मदं} ना ^{मदं} ॥ ^{मदं} दे ^{मदं} व ^{मदं} क ^{मदं} वा ^{मदं} व ^{मदं} ना ^{मदं} र ^{मदं} ध ^{मदं} । ^{मदं} व ^{मदं} द ^{मदं} र ^{मदं} उ
^{मदं} ना ^{मदं} र ^{मदं} वा ^{मदं} र ^{मदं} । ^{मदं} म ^{मदं} न्नी ^{मदं} स ^{मदं} द ^{मदं} य ^{मदं} ॥ ^{मदं} स ^{मदं} य ^{मदं} य ^{मदं} । ^{मदं} य ^{मदं} ति ^{मदं} ग ^{मदं} स ^{मदं} ख ^{मदं} न ^{मदं} र ^{मदं} ध ^{मदं} वा ^{मदं} ॥ ^{मदं} अ ^{मदं} व ^{मदं} य ^{मदं} ॥ ^{मदं} ल ^{मदं} स ^{मदं} म ^{मदं} वा ^{मदं} क ^{मदं} । ^{मदं} आ ^{मदं} द ^{मदं} र ^{मदं} ना ^{मदं} ध ^{मदं} र ^{मदं} वा
^{मदं} ॥ ^{मदं} रा ^{मदं} व ^{मदं} ॥ ^{मदं} स ^{मदं} त ^{मदं} स ^{मदं} रा ^{मदं} वा ^{मदं} रि ^{मदं} । ^{मदं} पा ^{मदं} य ^{मदं} य ^{मदं} र ^{मदं} स ^{मदं} ज ^{मदं} न ^{मदं} म ^{मदं} । ^{मदं} स ^{मदं} या ^{मदं} दू ^{मदं} स ^{मदं} या ^{मदं} र ^{मदं} स ^{मदं} य ^{मदं} य ^{मदं} । ^{मदं} य ^{मदं} स ^{मदं} वा ^{मदं} ग ^{मदं} क ^{मदं} वि ^{मदं} मा ^{मदं} य ^{मदं} न ^{मदं} । ^{मदं} अ ^{मदं} वि ^{मदं} य ^{मदं} य
^{मदं} स ^{मदं} य ^{मदं} क ^{मदं} र ^{मदं} व ^{मदं} वि ^{मदं} । ^{मदं} नि ^{मदं} क ^{मदं} ना ^{मदं} व ^{मदं} वि ^{मदं} नि ^{मदं} क ^{मदं} र ^{मदं} ॥ ^{मदं} उ ^{मदं} त ^{मदं} का ^{मदं} म ^{मदं} र ^{मदं} व ^{मदं} या ^{मदं} रि ^{मदं} क ^{मदं} । ^{मदं} य ^{मदं} स ^{मदं} र ^{मदं} म ^{मदं} र ^{मदं} उ ^{मदं} त ^{मदं} र ^{मदं} व ^{मदं} ॥ ^{मदं} अ ^{मदं} नू ^{मदं} रा ^{मदं} व ^{मदं} ॥ ^{मदं} य ^{मदं} रा ^{मदं} व ^{मदं} स

20

15

५१४

१०८

गात्रमतिनिष्ठय। स्यात् नमस्तुभ्यं पुस्तकं स्नानं याश्च पल्लवय। गूढाया विपुलनय। गम्युपायगवामगः।
 कुर्वोरावकुर्वीवकुनिष्ठितः गम्युपायगवामगः। स्वस्तीनायास्तनिष्ठितः। स्त्रीसीयस्त्रीमियाधन। स्त्रीकटीव
 सुर्वधयिनीवीयत्रिय। धीयिनी। मिवालोनीरुनवया। द्दकसदयुग्मया। इद्यासुयावसाययिसे
 तमस्त्रीकुजकुष। कुर्वीनयुस्त्रीगण्ड। वायालिङ्गमयिकुम। वान। द्वीविलेखेधमनूज। द्वीवनाः
 शिमनोस्यलो। द्वीवोनीयुजमवधो। द्वीवलो। कुसमस्त्रीनो। नदयुकालोनीवीकोलो। निर्वगंरुतिरागयाध

रुद्रमस्त

10

5

कृतान्तपुसिकीनागः। कुपकवधयाक्रियायदसक्षुनिमित्तव। यदगः स्यात्कृणमस्य। दणवस्त
 नकविधः। प्राणांरुषायायना। वगस्त्रीकविधीवगः। द्दकज्ञानज्ञानत्रिषु। स्यात्कृणः सादसिकः
 काभगामरुधवयि। युकालोनीयुसिद्धयि। निगमवद्विवातिगः। गमन॥ सूत्रमस्यावनिमिषो। यू
 नूषावात्समानवो। काकमस्याखलोधो। केदोउरुदीवीयुलो। जूरीखः पग्रहत्रगो। युवाः प
 धममदन। यदः सहाययुवो। गिरावद्विनीठया। शुक्रसमयिक। यदः सुकगववराववः।
 (यदः कगववराववः)

(यदः कगववराववः)

27811

१०२

[illegible]

नक्षत्र

20

5

श्री ४१

११०

^{कृत्वा} कृत्वा ^{रिक्त} रिक्त ^{तय} तय ^{कृत्वा} कृत्वा ^{दिक} दिक ^{मय} मय । ^{सहा} सहा ^{वत्} वत् ^{सहा} सहा ^{मा} मा ^{को} को । ^{नरा} नरा ^ख ख ^{ग्रा} ग्रा ^व व ^ध ध ^न न ^{रा} रा ^उ उ ^क क ^८ ८ ^र र
^{प्रा} प्रा ^{ग्र} ग्र ^य य ^{व्ये} व्ये ^क क ^८ ८ ^य य ^८ ८ ^{दी} दी ^र र ^{ये} ये ^{या} या ^{मृ} मृ ^य य । ^उ उ ^ज ज ^{दी} दी ^{को} को ^व व ^{त्} त ^ग ग ^भ भ ^८ ८ ^{नृ} नृ ^य य ^{नि} नि ^{मृ} मृ ^य य ^न न ^य य । ^न न ^८ ८ ^य य ^{रा} रा ^व व
^{दी} दी ^{को} को ^व व ^{त्} त ^ग ग ^भ भ ^८ ८ ^य य ^न न ^य य ^{मृ} मृ ^य य । ^{वि} वि ^{द्वान्} द्वान् ^{वि} वि ^{द्व} द्व ^य य ^{रा} रा ^{सा} सा । ^{हि} हि ^{मृ} मृ ^य य ^{नि} नि ^{मृ} मृ ^य य ^{त्} त ^{मी} मी । ^व व ^{द्व} द्व ^य य ^न न ^य य ^{सा} सा ^{को} को ^य य ^न न
^क क ^{नी} नी ^य य ^{मृ} मृ ^य य ^{वा} वा ^{त्} त ^य य ^{या} या ^८ ८ ^व व ^{नी} नी ^य य ^{मृ} मृ ^य य ^{वा} वा ^{त्} त ^य य ^{या} या ^८ ८ ^{सा} सा ^{धी} धी ^य य ^न न ^{सा} सा ^{धू} धू ^{वा} वा ^{रु} रु ^य य ^{या} या ^८ ८ ^{सा} सा ^न न ^८ ८ ^द द ^{त्} त ^{पि} पि ^व व ^ह ह ^{नि} नि ^{वृ} वृ ^थ थ
^प प ^न न ^ग ग ^क क ^{दी} दी ^य य ^ग ग ^{रु} रु ^ह ह ^८ ८ ^{दा} दा ^य य ^{पी} पी ^ठ ठ ^{का} का ^थ थ ^न न ^स स ^{नि} नि ^{ये} ये ^थ थ ^{ना} ना ^ग ग ^क क ^क क ^८ ८ ^{गु} गु ^{ला} ला ^{सु} सु ^ग ग ^य य ^{दि} दि ^{त्र} त्र ^८ ८ ^{मी} मी ^{पु} पु ^ग ग ^{रु} रु

10

5

^८ ८ ^{यु} यु ^ग ग ^{रा} रा ^{पि} पि ^य य ^८ ८ ^य य ^{त्नी} त्नी ^य य ^{त्रि} त्रि ^ज ज ^{ना} ना ^क क ^न न ^८ ८ ^{मृ} मृ ^ल ल ^ग ग ^भ भ ^{खा} खा ^८ ८ ^प प ^{त्रि} त्रि ^ग ग ^{रा} रा ^८ ८ ^{दा} दा ^य य ^य य ^ग ग ^८ ८ ^{व्य} व्य ^८ ८ ^म म ^{या} या ^{ना} ना ^{वा} वा ^व व ^न न ^{मि} मि
^{या} या ^८ ८ ^{वा} वा ^व व ^{नृ} नृ ^य य ^{हि} हि ^{रु} रु ^८ ८ ^{प्रा} प्रा ^{ग्नी} ग्नी ^८ ८ ^क क ^८ ८ ^{सु} सु ^{भा} भा ^{पे}

ॐ सांगी वंसा ॥ ७६७७७७ ॥ ३ सांगी वंसा ॥ ७६७७७७ ॥

यन्। युष्मवक्षन्तमनङ्ग। नूनयामनुत्तमम्। गहसम्प्रययुष्मन्। गंकोसंरावनास्वयि। उयमायांवि
 कस्यवा। सोमित्वंङ्गुष्मन्। अमांसहसमीयच। केवात्रिदियमृद्विवा। इवेत्तमर्थयात्रवे। नूनन
 क्थनिष्ठय। तृष्मीमर्थसुखजोषं। किंयक्कायांशुष्मन्। नोमयुकांशुसंरावा। काक्षीयगमक
 त्सन। अर्त्तहवधाययायि। गकिद्वानधवायक। दूवितक्कयत्रियुष्मन्। समयात्तिकमक्षयाशीपून
 त्रयुथमरुद। निन्निष्ठयनिषधयाशी। स्यात्सुवन्धचिनागीतं। निकटाग्नमिकपूया। उत्रयूरीवाद्यरीच

Классический вариант

20

७

10

राधेमन्त्र

विष्णुः श्रीकृष्णाय नमः । स्वर्गवपनसाकं स्वर्गार्कसंरायायाः किं । निषधवाक्कार्त्तकाव । जिह्वासानून
 यंवेत् । समीपारवतः गीयुः साकल्यासिमुखं रितेशं नाम यो काश्चयाः यादू । मिथैथान्यायं नरस्य
 वि । गितानकद्वीतीयार्थे हो विषाद दुर्गतिषु । अहं हं स्युः नरवदं हिं हं नाववधनः ॥ १७ ॥ ॥
 नूनं नकार्थवर्गः ॥ ॥ विनाय विनयाय । विनयाया विनयार्थकाः मूढः पूनः पूनः गव्यदंतीदू
 मंसकृत्समाः यावन्मिथैः ऊसां अक्रा । यत्पदि दाद्वीदू यदू । वसवत्सू किमूतं । सञ्जनीवचनि

॥१८॥

११३
११२

विष्णुः श्रीकृष्णाय नमः

अभिप्रायः

कृत्रय्यमिनां नरवर्गः । हिन्दुनां च वर्गः । यत्तद्व्यतस्तुताहताः यसाकस्युः विन्न । कदाचिद्वा
 पुसाद्विदुः साकं सन्तु समंसद । अनूकस्यार्थकयाध । यार्थकयुवथामूध । आहताहता किमूतं विक
 ल्य किं किमूतं । उद्विचसहवैयादस्यः ॥ ॥ पूजनवति । दिवादीत्यर्थः दायावनकं च वजनाविति
 । गित्यर्थः सावित्रिप्रार्थसम्पादनार्थकाः स्मृः यादू वा उं गं हं देताः । समया नि कवादिनूक् । अ
 गर्कितां पुसहसां स्या । त्युः पूनः त्रितः । स्वादादवदविद्वान् । श्रीवद्वोषयुषद्वध । किं विदीषन्म

७

रूपी

नामं लयः पुण्यामृगं रावां नरः । वद्धाय धां गच्छेत्तैर्वै । साम्यं हा हा य विस्मयः । मो न तुं तं श्री कां सयः ४ सयः
दितं लक्ष्मीं दिष्ट्या समयं ज्ञात्तुं । ह्यो न नृ धां नरां नरा । अ न न रं धां म धां स्युः ४ पु स र्जं तु द भ र्थ
कां । यू कं धं सी पु रं स्तान् । सी कूं ग भ्यं दं ना दतं । अ रा यं न रं नाना वि मा स्य मां स र्जं वा न (दा) ॥ ११ ॥ य क
न रं च य दितं ग ल्पं लं दं जा सा दयं । यु का र्णं या दू रं वि ४ स्या द्धामं र्थं य र म म त । स म न तं मु य वि त
४ स र्वं ना वि द्यं गि र्णं चि । अ क मा नू म नो का म म स्र या य ग म मु च । न नू यं स्या दि रा धा को क चि ल्क म

৪৯৪৮

四

۱۱۳

यवदनं। निःश्वसं दृष्टवर्मगच्छं यथास्वकुयथायथं। मृत्वा मिथ्यायवितथं यथार्थकुयथागर्थं। स्मृतं
वगुपुनर्वचं। त्वयध्वनवाचकाः। योगीनीगार्थकं नूनं मवर्धनं निम्बितद्वयं। सम्वदध्वनं त्वव
ममवस्वयमात्मना। अल्पनीचैर्मदल्पैश्चैः। योगीरुन्मादुतगनेः। समो नित्यं वहिर्वाक्। समाती
तसमदगने। अस्ति सख्युषाकावृ-मं यत्न नूनयत्ययि। दूतकस्यादूषागने-नवसानं नमा
नती। पुनत्रर्थेन निन्दया। दूष्टसूक्ष्मसंभनं। सोर्यसाययुगोयोतः। यगाव निकायानिक।

20

15

10

5

श्री १०

^{उपस}पत्रुत्यनयेषमाक-^{रति}रव्वरव्वनप्रयति।^{कनस}अंशगो^{कम}द्रुथरव्व^{कम}द्रो^{कम}।^{कम}खोदो^{कम}रव्वो^{कम}रुनाय^{कम}रात्।^{कम}नथा^{कम}धरा^{कम}ना^{कम}या
^{उपस}न्यत^{उपस}रं^{उपस}नरा^{उपस}त्प^{उपस}रव्व^{उपस}शू^{उपस}रा^{उपस}क^{उपस}य^{उपस}॥^{उपस}उ^{उपस}रा^{उपस}य^{उपस}शू^{उपस}॥^{उपस}य^{उपस}त्र^{उपस}त्त^{उपस}क्षि^{उपस}य^{उपस}त्र^{उपस}य^{उपस}चि^{उपस}।^{उपस}प्लो^{उपस}ग^{उपस}त^{उपस}ना^{उपस}ग^{उपस}त^{उपस}क्षि^{उपस}य^{उपस}।^{उपस}य^{उपस}त्र
^{उपस}स्व^{उपस}॥^{उपस}ग^{उपस}त्प^{उपस}र^{उपस}द^{उपस}नि^{उपस}।^{उपस}ग^{उपस}दा^{उपस}ग^{उपस}दा^{उपस}नी^{उपस}यू^{उपस}ग^{उपस}य^{उपस}द^{उपस}क^{उपस}दा^{उपस}स^{उपस}र्व^{उपस}दा^{उपस}स^{उपस}दा^{उपस}।^{उपस}उ^{उपस}त्त^{उपस}दि^{उपस}सं^{उपस}य^{उपस}गी^{उपस}दा^{उपस}नी^{उपस}।^{उपस}सं^{उपस}धू^{उपस}ना^{उपस}सी^{उपस}य^{उपस}गी^{उपस}त^{उपस}दा^{उपस}
।^{उपस}दि^{उपस}ग^{उपस}द^{उपस}ग^{उपस}का^{उपस}सं^{उपस}य^{उपस}र्व^{उपस}दा^{उपस}।^{उपस}या^{उपस}गुं^{उपस}द^{उपस}गुं^{उपस}प^{उपस}त्त^{उपस}ग^{उपस}मं^{उपस}द^{उपस}य^{उपस}॥ ॥^{उपस}रु^{उपस}त्त^{उपस}य^{उपस}य^{उपस}य^{उपस}व^{उपस}र्त्त^{उपस}॥ ॥^{उपस}स^{उपस}त्ति^{उपस}ग^{उपस}म^{उपस}मे^{उपस}॥^{उपस}स^{उपस}न्ना^{उपस}दि
क^{उपस}रु^{उपस}द्वि^{उपस}त^{उपस}स^{उपस}मा^{उपस}स^{उपस}ज^{उपस}॥^{उपस}अ^{उपस}नू^{उपस}क^{उपस}॥^{उपस}सं^{उपस}ग्र^{उपस}ह^{उपस}त्ति^{उपस}गं^{उपस}।^{उपस}सं^{उपस}की^{उपस}र्त्त^{उपस}व^{उपस}दि^{उपस}हं^{उपस}न^{उपस}य^{उपस}त्।^{उपस}सि^{उपस}ग^{उपस}म^{उपस}वि^{उपस}धि^{उपस}र्व^{उपस}ी^{उपस}पी^{उपस}।^{उपस}वि^{उपस}ग^{उपस}म^{उपस}वि^{उपस}य^{उपस}

११४

अवाधित^१शमियामी^२द्वि^३गमेका^४वसथानिया^५विनामंवा^६।^७नाम^८वि^९शू^{१०}नि^{११}ग^{१२}व^{१३}त्ती^{१४}।^{१५}वी^{१६}म^{१७}दि^{१८}ग^{१९}ह^{२०}न^{२१}दी^{२२}दि^{२३}
यी^{२४}।^{२५}अ^{२६}न^{२७}के^{२८}दि^{२९}गुं^{३०}व^{३१}का^{३२}।^{३३}न^{३४}स^{३५}या^{३६}ग^{३७}यू^{३८}ग^{३९}म^{४०}दि^{४१}शि^{४२}॥^{४३}ग^{४४}त्त^{४५}न्^{४६}य^{४७}निक^{४८}श^{४९}गं^{५०}।^{५१}ये^{५२}त्र^{५३}मे^{५४}धू^{५५}नि^{५६}का^{५७}दि^{५८}व^{५९}त्।^{६०}मी^{६१}रा
वा^{६२}दा^{६३}व^{६४}नि^{६५}॥^{६६}कि^{६७}न्^{६८}धू^{६९}।^{७०}ध^{७१}र्व^{७२}वा^{७३}या^{७४}यू^{७५}उ^{७६}ति^{७७}।^{७८}उ^{७९}म^{८०}दि^{८१}व^{८२}नि^{८३}यू^{८४}वि^{८५}य^{८६}।^{८७}आ^{८८}व^{८९}द^{९०}नी^{९१}य^{९२}त्।^{९३}स्कि^{९४}र^{९५}।^{९६}ग^{९७}त्ती^{९८}ग^{९९}
यी^{१००}यु^{१०१}द^{१०२}र^{१०३}ध^{१०४}व^{१०५}ने^{१०६}मो^{१०७}खा^{१०८}या^{१०९}त्त^{११०}वा^{१११}ध^{११२}दि^{११३}क^{११४}।^{११५}य^{११६}॥^{११७}सा^{११८}दि^{११९}या^{१२०}स्या^{१२१}॥^{१२२}दा^{१२३}धु^{१२४}या^{१२५}ता^{१२६}दि^{१२७}रु^{१२८}रु^{१२९}धी^{१३०}॥^{१३१}अ^{१३२}न^{१३३}पा
ता^{१३४}व^{१३५}म^{१३६}ग^{१३७}या^{१३८}ने^{१३९}ली^{१४०}या^{१४१}गा^{१४२}त्त^{१४३}ध^{१४४}मि^{१४५}दि^{१४६}क्।^{१४७}मी^{१४८}स्या^{१४९}त्त^{१५०}वि^{१५१}न^{१५२}ध^{१५३}म^{१५४}स्या^{१५५}दि^{१५६}।^{१५७}वि^{१५८}व^{१५९}दा^{१६०}य^{१६१}य^{१६२}य^{१६३}दि^{१६४}।^{१६५}ली^{१६६}का^{१६७}ग^{१६८}रु^{१६९}सि

20

15

10

5

0

कोटीका धातवीयं जि कोठकी। सिधुका सात्रिका हिक्का। पाथिका लापिपीसिका। तिन्दुकी कलिका राक्षि
 ४ सुत्रका सुत्रिमात्रय ४। यिका वितण्डा काकिध. ग्यूर्णी गमणी दुधी दनत्। साति ४ कका गथी सुन्दी. नाः
 शीराजसहापित्र। उंरायं राउमधूराया दापय द्वितीय। मल्लरी यत्रयी यारी. हागा सन्तयसिध
 ला। लादा सिद्धावगदूषा. गृधुसीवमसीमसी। पूंस्त्रसहानूवना ४. सयर्थाया ४ सूत्रा सूत्रा ४। स्वर्गा
 यागमदिमद्यावि. दूका साठिगत्रायय ४। कूशुननदयूषी गुयत्रिहूययययध ४। धनयधनियथ

शी ४॥

११७

क्रात्मगुत्तमानर्गुकर्दम ४। कत्रग (लोष्ठ) दार्दक. कलुकगं नखस्तना ४। अक्राहाका ४। कउरदा. वागाना
 ४। यागसंरुका ४। श्रीपिष्ठाया ग्यनिर्यासा. असनना अवाधिता ४। कलात्रुजगुवसूनि. हिल्लगुत्रविवा
 मका ४। कवंधारामत्राया ना. यद्यदका अमी अथ। यथनयसंगा या ना. (गगं) ख्या ग्यय. दीकया ४। ना
 म्ना कर्तुवितावय. द्य ४। जयुं दुद्याथूय। ल्य ४। कर्तुवीमनिकर्त. काद्या ४। कि ४। यादिगाना त ४। द्द्विधववउवा
 समाहर्त। कान ४। सुय्य नूयर्थाय ४. यर्धोययर्धका पित। यठकय्य नूवाकय्य. यल्लकय्य कूडूककशयू

सूर्यकानिमधयकूडाका
 यद्वय. निगिरताय ३३३

centimeters 5 10 15 2.0 2.5

20

15

10

श्री ११॥

११५३

खोत्पूखः समुद्रः विठपट्टयगः यं खटकाज्ञात्रघट्टरुद्राभ्यविद्युः (मधुचि विद्युत्तत् । गडूकत्र (धु
लकुता वत्रधुभ्यकि (मधुघृणः शदति सीमकहत्रिता । तामकोझीथ वूदूदाश काशमर्द्धवूदः कून्ः
रुधमुपोसययको । आगयः कृत्रियनारिः कत्रयं दूत्रककनाशदूरः दूत्रयं वूकाभ्य । (मलहिं गु
संपूगलाशिवतां सरसमन्त्राभ्य । यूत्रागमभ्ययद्विगः कूत्माषात्रहस (भ्येव संकटाहः पतद्रुह
शदिहीनं नात्रखावध । यदुभ्ययदिभादकः शशीनायूमी सत्रुधिर । मूखादिद्विदीवली हलहमगु

त्वराहसुखदूःखगुणगुणी । जलपूषादितवर्ण । वज्रनाना नूतयनी । काद्रीगता हि संख्या न्या । बाल
क्षानियूनं वगत् । द्युक्मंसि सूननं । यदनाकमं कर्तृत्रि । शनीसत्रायधं मिष्टं । गार्गीया कूखाया
चिरी । पागाद्यकनेत्रकार्थ । दिगुलक्षानूसात्रतः । द्वेद्वेकलायायीरावा । पथः संख्यायायात्यत्रः शव
द्याभ्ययावदूना । द्विद्वार्यं संहतोसरा । भलार्थयियत्रां राजा । मून्यार्थदराजकात् । दासीस
रान्यसरी । त्रदूः सरमिमादिगः । उयक्षीयकुमानभ्य । गदादित्यकाशन । कायदं कायकुमादि ।

२०
१५
१०
०
० centimeters 5 10 15 2.0 2.5

द्वितीयांशकनिमनुष्याकावयादायक

॥१॥

ककागीनप्रनामसू। रावनदाकविज्ञान्यसमहारावकर्मलक्षणांशुनक४ययया४यूधसूदिना

रान्तरु४यरी। क्रियावायानीरादका। नाकलयाकृताठक। चार्यपिठ्ठुगृहसूदी। निरीटमर्मणा

ऊनी। राजसूर्यवाययरी। गंडयंडाकृतीकव४। मादिकरावासिंदूर। चीनचीवनयंडरी। साकाय

तीरुनीगारं। द्विदरंस्कातवाहीक। यूनयूसकया४गषा। द्विचिधमककठका४। भादकादधुक

सूक४गभठक४कर्वतावूठ४। यातकाद्यागयत्रक। तमालामालकानठ४। कूरुमूधुसीधूपूरु। कृति

गडा. उतधप्रजूरुनगठनामगानाममात्रकावा३
पद्य. जूरुननामगानाउमधप्रयतदसंमालु३

॥१॥

तंदमकृदिनी। संगर्मगगमानामर्म। गम्वलावायताधुवी। कवियंकर्मकर्यासू। यात्रावाययूगंधरी। यूर्य

युग्रीवपाणीव। यूर्यवमसचिकुसी। अर्द्धबोद्यतादीनी। यूंस्त्राडीवदिकंधुनी। तनाकमिहसाकवि

तश्चदस्त्रमुगभवत्। सुयूसकयाययलाका। द्वियठ४षद्यदायगभ४। जातिरदायहिमूहि। स्वाग

यकीठवम्बिकी। जातिरदा४पूमाखायध। सुयागे४सदमलका४। मनिर्वनाठक४। स्वाति। वरुकाजा

तलिर्मनू४। मखास्याटीककंधू। यूर्यहि४सीटीकटीकूडी। सुनयूसकयाकृव। क्रियया४य४कृवि

॥१॥

॥२॥

इव-शोविहोमोवितीमेगीमेगुव-इयागुदाददशयस्यनयाकदाहसना-आयागालामुनालि
 गमशस्यादानूतानन्यनिर्ग-लमगालमितप्रचदिक-आयनतालत्रयदा-दिबुध्ययसिनयल
 यादिबिद्वद्विखदीय-गितकयगितकृपि-गिषुपाणीयदीवादी-यदीकूवलसंतिमो-यवर्लि
 गीस्यधन-द्वंद्वगत्युषयित-अर्थनाशयाद्यसंयाफा-यन्नयद्वा-यत्रायगमश-गदितार्थद्वि
 गुसंख्या-सर्वनामतदनका-वद्वीहिरदिगममा-मूनयनदूदादती-गुदाद्वक्रियायाग-

मानदास सुगत दासया संकलन
 आशा सफु-कृपियात उपहार ।

कादितो-यत्रगामिन-कत-कल-यसि-कलाकल-निकर्म-अनायनातनरका-
 र्थनानार्थशुद्धका-वर्षा-सिषुसमायूषादमर्मा-हिरवायी-यत्रत्रिधा-संग-रुगीनिक
 युयागत-॥ इति लिङ्गादिहंशवर्ण-॥ ॥ इत्यमरसिद्धकनोनामलिङ्गनू-सन
 दि(अ)निद्वादिकाउसिकाहंसमार्क-॥ ॥ गदिवदमदीधराकित-जिनमास-
 पूतकव-धवा-लिखदिस-गानूला-कून-यदकार्ष-द्वि-वद-राजनामा-॥

[illegible]

